॥ श्री गणेशाय नमः ॥

व्यापार भविष्य

असली

तेज़ी मन्दी

सट्टा

लेखक :—
राज्य ज्योतिषी पं० देवराज जी
तथा
कुँवर श्यामसुन्दर जी

प्रकाशक :
रतन एण्ड कम्पनी
दरीबा कलाँ, देहली
मू० ५)

श्री गणेशाय नमः

तेजी मन्दी

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहम् वन्दे परमानन्दम् माधवम् ॥

स्वरोदय शास्त्रियों के मतानुसार किसी वर्ष की तेजी मन्दी का ज्ञान चैत्त शुक्ला प्रतिपदा से ही कि जाता है, कारण कि इसी दिन अर्थात चैत्त शुक्ल पक्ष की एकम से ही विक्रमादित्य का संवत बदलता है। और उस वर्ष की तेजी मन्दी के ज्ञान के लिये यह भी आवश्यक है कि मेष आदि राशियों तथा उनके स्वामी का ज्ञान ग्रहों का ज्ञान, ग्रहों के उच्च नीच का ज्ञान, ग्रहों के मूल त्रिकोण का ज्ञान और उनके (ग्रहों के) मित्र, सम और शत्रुओं का ज्ञान हो। अतः यहां सर्व प्रथम पाठकों को राशियों और ग्रहों का, राशियों के स्वामियों और ग्रहों के उच्च, नीच, मूल त्रिकोण और मित्र, सम तथा शत्रुओं का ज्ञान कराया जायेगा।

प्रथम राशियों के नाम लिखते हैं।

(१) मेष
(२) वृष
(३) मिथुन
(४) कर्क
(५) सिंह
(६) कन्या

(७) तुला
(८) वृश्चिक
(९) धन
(१०) मकर
(११) कुंभ
(१२) मीन

अब सूर्यादि नौ ग्रहों के नाम दिये जाते

(१) सूर्य
(२) चन्द्र
(३) मंगल
(४) बुध
(५) गुरु
(६) शुक्र
(७) शनि
(८) राहु
(९) केतु

किस राशि का स्वामी कौन सा ग्रह है अब इस को लिखा जाता है।

मेष राशि का स्वामी मंगल है।
वृष राशि का स्वामी शुक्र है।
मिथुन राशि का स्वामी बुध है।
कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है।
सिंह राशि का स्वामी सूर्य है।
कन्या राशि का स्वामी बुध है।
तुला राशि का स्वामी शुक्र है।
वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल है।

धनु राशि का स्वामी गुरु है।
मकर राशी का स्वामी शनि है।
कुंभ राशि का स्वामी शनि है।
मीन राशि का स्वामी गुरू है।

कौन सा ग्रह किस राशि के उच्च तथा किस राशि के किस अंश तक नीच है अब इसको लिखते हैं।

सूर्य मेष राशि के १० अंश तक उच्च तथा तुला राशि के दस अंश तक नीच है।

चन्द्रमा वृष राशि के ३ अंश तक उच्च तथा वृश्चिक राशि के ३ अंश तक नीच है।

बुध ग्रह कन्या राशि के २८ अंश तक उच्च तथा मीन राशि के १५ अंश तक नीच है।

वृहस्पति ग्रह कर्क राशि के ५ अंश तक उच्च तथा मकर राशि के ५ अंश तक नीच है।

शुक्र ग्रह मीन राशि के २७ अंश तक उच्च तथा कन्या राशि के २७ अंश तक नीच है।

शनि ग्रह तुला राशि के २० अंश तक उच्च तथा मेष राशि २० अंश तक नीच है।

सूर्य आदि ग्रहों के मूल त्रिकोण

सूर्य का मूल त्रिकोण पांचवीं राशि सिंह है।
चन्द्रमा का मूल त्रिकोण दूसरी राशि वृष है।
मंगल का मूल त्रिकोण पहली राशि मेष है।
बुध का मूल त्रिकोण छठी राशि कन्या है।
गुरु का मूल त्रिकोण नौवीं राशि धनु है।
शुक्र का मूल त्रिकोण सातवीं राशि तुला है।
शनि का मूल त्रिकोण ग्यारहवीं राशि कुम्भ है।

कौन सा ग्रह किस ग्रह का मित्र है ?

सूर्य—चन्द्र मंगल और गुरु का मित्र है।
चन्द्र—बुध और सूर्य का मित्र है।
मंगल—सूर्य और गुरु का मित्र है।
बुध—शुक्र और सूर्य का मित्र है।
गुरु—सूर्य चन्द्र और मंगल का मित्र है।
शुक्र—बुध और शनि का मित्र है।
शनि—बुध और शुक्र का मित्र है।

सम ग्रह

सूर्य का सम ग्रह बुध है। चन्द्र के सम ग्रह मंगल, गुरु, शुक्र और शनि हैं।

मंगल के सम ग्रह शुक्र और शनि हैं।
बुध के सम ग्रह मंगल, गुरु और शनि हैं।
गुरु का सम ग्रह शनि है।
शुक्र के सम ग्रह मंगल और गुरु हैं।
शनि का सम ग्रह गुरु है।

शत्रु ग्रह

सूर्य के शत्रु शनि और शुक्र हैं।
मंगल का शत्रु बुध है।
बुध का शत्रु चन्द्र है।
गुरु के शत्रु बुध और शनि हैं।
शुक्र के शत्रु सूर्य और चन्द्र हैं।
शनि के शत्रु सूर्य चन्द्र और मंगल हैं।

राशियों द्वारा तेजी मन्दी देखने की विधि का वर्णन

प्रायः प्रत्येक वस्तु की स्वामी राशि होती है, अतः किसी वस्तु की तेजी मन्दी देखने से पूर्व उसके स्वामी का ज्ञान रखना अत्यन्त आवश्यक है। अतः नीचे मुख्य २ वस्तुओं की स्वामी राशि को लिखा जाता है।

मोती

मोती का स्वामी राशि मीन है, अतः मोती की तेजी मन्दी मीन राशि द्वारा देखनी चाहिए।

स्वर्ण

स्वर्ण का स्वामी राशि मेष है, अतः स्वर्ण की तेजी मन्दी मेष राशि द्वारा देखनी चाहिये।

गेहूं

गेहूं का स्वामी राशि कुम्भ है, अतः गेहूं की तेजी कुम्भ राशि द्वारा देखनी चाहिये।

चीनी

चीनी का स्वामी राशि भी कुम्भ है, अतः चीनी की भी तेजी मन्दी कुम्भ राशि द्वारा देखनी चाहिये।

चावल

चावलों का स्वामी मेष राशि है, अतः चावलों की तेजी मन्दी मेष राशि द्वारा देखनी चाहिये।

जवार

जवार का स्वामी वृश्चिक राशि है, अतः जवार की तेजी मन्दी वृश्चिक राशि द्वारा देखनी चाहिये।

रुई

रुई का स्वामी मिथुन राशि है, अतः रुई की तेजी मन्दी मिथुन राशि द्वारा देखनी चाहिये।

क्रूर और सौम्य ग्रहों का विचार

चन्द्रमा, बुध, गुरु और शुक्र सौम्य ग्रह कहलाते हैं, और शेष ग्रह सूर्य मंगल, शनि राहु और केतु क्रूर ग्रह कहलाते हैं।

क्रूर ग्रहों का मार्कीट पर प्रभाव

यदि क्रूर ग्रह राशि से तीसरे छटे, दसवें, ग्यारहवें हों तो उस वस्तु के भाव गिर जाते हैं। किन्तु यदि यही ग्रह उसी राशि के पहले दूसरे चौथे पांचवें सातवें, आठवें नवें और बारहवें हो तो वस्तु के भावों में तेजी आजाती है। उदाहरणार्थ जब गेहूँ का स्वामी कुम्भ राशि है, और सूर्य जोकि एक क्रूर ग्रह है उसके (कुम्भ राशि के) तीसरे अथवा छटे अथवा दसवें अथवा ग्यारहवें यदि जा रहा है तो गेहूं के भाव गिर जायेंगे। इसी प्रकार सूर्य के इसी राशि के पहले दूसरी चौथे पाँचवे सातवें आठवें नवें बारहवे जाने से गेहूं के भाव में तेजी आ जायेगी। स्मरण रहे कि राशि से जितने भी अधिक क्रूर ग्रह तीसरे छटे दसवें ग्यारहवें होंगे उतनी ही उस वस्तु में मन्दी और राशि से जितने भी अधिक क्रूर ग्रह पहले दूसरे चौथे पांचवें सातवें आठवें नवें और बारहवें होंगे उतनी ही उस वस्तु में तेजी आयेगी।

मार्कीट पर सौम्य ग्रहों का प्रभाव

चन्द्रमा

चन्द्रमा के राशि से चौथे आठवें और बारहवें होने पर उस वस्तु में मन्दी और पहिले दूसरे तीसरे पाँचवें छठे सातवें नवें दसवें और ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा के होने पर उस वस्तु के भावों में जिस वस्तु को वह राशि स्वामि हो, तेजी आ जाती है।

बुध

बुध के राशि से दूसरे पाँचवे आठवें दसवें और ग्यारहवें होने पर उस वस्तु के भावों में मन्दी जिसकी कि राशि स्वामी हो और पहिले, तीसरे चौथे आठवें सातवें नवें बारहवें होने पर उस वस्तु में तेजी आ जाती है।

गुरू

गुरू के राशि से दूसरे चौथे पाँचवें सातवें नवें दसवें और ग्यारहवें होने पर उस वस्तु में जिसकी वह राशि स्वामी हो मन्दी, और उसी राशि से पहिले तीसरे छठे आठवें बारहवें होने पर उस वस्तु के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र

शुक्र के राशि से पहिले दूसरे तीसरे चौथे पांचवे आठवें नवे दसवें ग्यारहवें और बारहवें होने से जिस वस्तु की राशि हो उस वस्तु के भावों में मन्दी और राशि से छठे सातवें होने पर उस वस्तु के भावों में आ जाती है।

क्षीण चन्द्रमा

क्षीण चन्द्रमा के राशि से तीसरे छटे दसवें और ग्यारहवें होने से उस राशि की वस्तु के भावों में मन्दी आ जाती है।

ग्रहों के नक्षत्र वेध द्वारा तेजी मन्दी देखने की विधि

ग्रह नक्षत्र वेध चक्र

	कृत्ति	रोहि०	मृग०	आर्द्रा	पुन०	पुष्य	श्ले०	
भरणी								मघा
अश्विनी								पू० फा०
रेवती								उ० फा०
उ० भा०								हस्त
पू० भा०								चित्र
शत०								स्वाती
नि०								विशा०
	श्रवण	अभि	उ षा०	पू षा०	मूल	ज्येष्ठ	अनु०	

जब क्रूर ग्रह अश्विनी नक्षत्र में वेध करते हैं तो चावल, घी सब प्रकार के धान्य और वस्त्रों में तेजी आ जाती है, और गधे ऊंट खच्चर आदि पशु महंगे हो जाते हैं। और जब इसी नक्षत्र में सोम्य ग्रहों का वेध होता है तो उपरोक्त सारी वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

जब क्रूर ग्रह भरिणी नक्षत्र में वेध करते हैं तो गेहूँ, जो, जवार, चावल, सौंठ, मिर्च और पीपल आदि वस्तुओं के भाव बढ़ जाते हैं।

जब क्रूर ग्रह कृत्तिका नक्षत्र में वेध करते हैं तो चावल, चने, जौ, तिल, और हीरा तथा सर्व प्रकार की धातुओं के भाव में तेजी आ जाती है। और इस नक्षत्र में जब सोम्य ग्रह वेध करते हैं तो उन्हीं सारी वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

जब क्रूर ग्रह रोहनी नक्षत्र में वेध करते हैं तो सर्व प्रकार के धान्य रस और वस्तुओं के भाव बढ जाते हैं। और इसी नक्षत्र में जब सोम्य गृह वेध करते हैं तो यही वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह मृगशिरा नक्षत्र में वेध करते हैं तो प्रायः सर्व प्रकार के जल के अन्न तथा गाय भैंस आदि पशुओं की कीमतें बढ़ जाती है। किन्तु सौम्य ग्रहों के इसी नक्षत्र में वेध करने से इन सारी वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

जब क्रूर ग्रह आर्द्रा नक्षत्र में वेध करते हैं तो प्रायः सब प्रकार के नमक, तेल, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुयें महंगी हो जाती है। और यह महंगाई कोई एक मास तक रहती है। और जब इसी नक्षत्र में सौम्य ग्रह वेध करते हैं तो यही वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह पुनर्वसु नक्षत्र में वेध करते हैं तो सोना तिल कपास सूत कुसुंभा और गेरूरा रंग की वस्तुओं के भाव दो मास

तक तेज रहते हैं। सौम्य ग्रहों के इसी नक्षत्र में वेध करने से इन्हीं वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

जब क्रूर ग्रह पुष्य नक्षत्र में वेध करते हैं तो सोना चांदी के भाव बढ़ जाते हैं, घी तेल सरसों चावल आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है और जब सौम्य ग्रह इसी नक्षत्र में वेध करते हैं तो यही सारी की सारी वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह आश्लेषा नक्षत्र में वेध करते हैं तो गेहूँ, मंजीठ, मसूर, कोदू मिर्च आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है। किन्तु सौम्य ग्रहों के नक्षत्र में वेध करने से यह सारी वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह मघा नक्षत्र में वेध करते हैं तो तिल तेल, चने मूंग घी गुड़ और अलसी के भाव बढ़ जाते हैं। किन्तु सौम्य ग्रहों के इसी नक्षत्र में वेध करने से यह सारी वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में वेध करते हैं तो ऊन, कम्बल, तिल ज्वार और चांदी के भावों में तेजी आ जाती है, और जब सौम्य ग्रह इसी नक्षत्र में वेध करती हैं, तो इन्हीं सारी वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

जब क्रूर ग्रह उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में वेध करते हैं तो चावल कोदू, उड़द सैंधा नमक और लहसुन आदि वस्तुओं के भाव तेज हो जाते हैं। इसी नक्षत्र में सौम्य ग्रहों के वेध करने से यही वस्तुयें मन्दी हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह हस्त नक्षत्र में वेध करते हैं तो रक्त चन्दन कपूर देवदारू और अगर के भावों में तेजी आ जाती है। और जब सौम्य ग्रह इस नक्षत्र में वेध करते हैं तो इन सारी वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

जब क्रूर ग्रह चित्रा नक्षत्र में वेध करते हैं तो सोना, रत्न गेहूं उरद मूंग आदि वस्तुओं के भाव तेज हो जाते हैं। घोड़े महंगे हो जाते हैं। किन्तु सौम्य ग्रहों के इसी नक्षत्र में वेध करने से यह सारी वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह स्वाती नक्षत्र में वेध करते हैं तो सुपारी मिर्च सरसों तेल हींग राई और खजूर के भावों में तेजी आ जाती है और जब सौम्य ग्रह इसी नक्षत्र में वेध करते हैं तो इन सारी वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

जब क्रूर ग्रह विशाखा नक्षत्र में वेध करते हैं तो चावल गेहूं मूंग राई मसूर और कपड़ा के भावों में तेजी आ जाती है। सौम्य ग्रह के इसी नक्षत्र में वेध करने से यह सारी वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह अनुराधा नक्षत्र में वेध करते हैं तो सब प्रकार की दालों के भावों में तथा अन्न चावल, मकोथ और चने के भावों में तेजी आ जाती है। और जब सौम्य ग्रह इस नक्षत्र में वेध करते हैं। तो इन सारी वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

जब क्रूर ग्रह ज्येष्ठा नक्षत्र में वेध करते हैं तो गुग्गुल, गुड़, लाख, कपूर पारा हींग और कांशी के भाव तेज हो जाते हैं। सौम्य ग्रहों के इसी नक्षत्र में वेध करने से इन वस्तुओं का भाव गिर जाते हैं।

जब क्रूर ग्रह मूल नक्षत्र में वेध करते हैं तो श्वेत वस्तुयें, सैंधा नमक कपास और सर्व प्रकार के धान्य महंगे हो जाते हैं। और जब इसी नक्षत्र में सौम्य ग्रह वेध करते हैं तो इन सारी वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

जब क्रूर ग्रह पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में वेध करते हैं, तो घी कन्द मूल फल और धान आदि के भावों में तेजी आ जाती है। और जब

सौम्य ग्रह इसी नक्षत्र में वेध करते हैं तो इन सारी वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

जब क्रूर ग्रह उत्तराषाढ़ नक्षत्र में वेध करते हैं तो लोहा पीतल तांबा आदि धातुओं के भाव तेज हो जाते हैं और घोड़े बैल तथा हाथी आदि चौपायों की कीमतें बढ़ जाती है। और जब सौम्य ग्रह इसी नक्षत्र में वेध करते हैं तो यह सारी वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह अभिजित नक्षत्र में वेध करते हैं तो दाख खजूर सुपारी मुंग जायफल और असगन्ध के भावों में तेजी आ जाती है। और जब सौम्य ग्रह इसी नक्षत्र में वेध करते हैं तो इन सारी वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

जब क्रूर ग्रह श्रवण नक्षत्र में वेध करते हैं तो पीपल, सुपारी तुष धान्य तथा मीठी वस्तुओं के भाव तेज हो जाते हैं। किन्तु सौम्य ग्रहों के इसी नक्षत्र में वेध करने से यह सारी वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह धनिष्ठा नक्षत्र में वेध करता है। तो सोना चांदी तथा मणि मोती आदि के भावों में तेजी आ जाती है। और सौम्य ग्रह जब इसी नक्षत्र में वेध करते हैं तो यह वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

जब क्रूर ग्रह शतभिषा नक्षत्र में वेध करते हैं तो तेल कोदूं मदिरा पीपलि तथा मूली आदि के भाव तेज हो जाते हैं। सौम्य ग्रहों के इसी नक्षत्र में वेध करने से यह वस्तुयें सस्ती हो जाती है।

जब क्रूर ग्रह पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में वेध करते हैं तो जाय फल धान्य धातु और औषधियों के भाव बढ़ जाते हैं। यदि सौम्य ग्रह इसी नक्षत्र में वेध करते हो तो यह वस्तुयें सस्ती हो

जायेंगी।

जब क्रूर ग्रह उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र में वेध करते हैं तो गुड़ शक्कर, खाण्ड तिल और खलि के भावों में तेजी आ जाती है। और जब सौम्य ग्रह इसी नक्षत्र में वेध करते हैं तो इन्हीं वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

जब क्रूर ग्रह रेवती नक्षत्र में वेध करते हैं तो मणि मोती श्रीफल और सुपारी के भावों में तेजी आ जाती है। सौम्य ग्रहों के इसी नक्षत्र में वेध करने से यह सारी वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

मेष आदि राशियों में ग्रहों के उदय तथा अस्त होने से मार्कीट पर प्रभाव

१—मेष राशि में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि मेष राशि में आ जाय तो सोना चान्दी, गुड़ खाण्ड घी तेल रुई कपास आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

चन्द्रमा के मेष में आने से अफीम, रुई, गेहूं, चना और अलसी आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि मेष राशि में आ जाय तो तिल ज्वार ऊन कपास, चान्दी, और नग तथा रत्नों के भाव बढ़ जाते हैं सर्व प्रकार के अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

बुध यदि मेष राशि में आ जाये तो रुई, खाण्ड, तिल तेल और चान्दी के भाव गिर जाते हैं। सोना मोती और जवाहरात के भावों में तेजी आ जाती है। पशु महगे हो जाते हैं।

गुरु यदि मेष राशि में आ जाय तो गुड़, चीनी और कपड़े के भावों में मन्दी आ जाती है। रुई में काफी घटा बढ़ी होती है।

शुक्र यदि मेष राशि में से हो रुई चान्दी और अनाज के भावों में काफी तेजी आ जाती है। अलसी और ऊन के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि मेष राशि में आ जाय तो सोना चान्दी मोती पुखराज रत्न धान्य और रुई आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

राहु यदि मेष राशि में आ जाये तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है, और देश में प्रायः अकाल पड़ जाता है।

जब शुक्र और राहु मेष राशि में एक साथ आ जाते हैं तब भी अकाल पड़ जाता हैं, और सूर्य मंगल शुक्र और शनि यदि मेष राशि में एक साथ आ जाये तो यह भी अकाल का कारण बन जाते हैं।

सूर्य और शुक्र के मेष राशि में एक साथ आ जाने से रुई सस्ती हो जाती है, और चान्दी और अफीम के भावों में तेजी आ जाती है।

राहु, मंगल शुक्र जब एक साथ राशि में आ जाते हैं तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

२—वृष राशि में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि वृष राशि में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। रुई और चान्दी के भाव गिर

जाते हैं।

चन्द्रमा वृष संक्रान्ति के दिन यदि वृष राशि में हो तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

मंगल यदि वृष राशि में आ जाय तो सोना रुई कपास कपड़ा कुंकुम, चन्दन और सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि वृष राशि में आ जाय तो अफीम के भावों में तेजी आ जाती है। जब बुध वृष राशि में आता है तो पहले १५ दिन रुई के भावों में मन्दी आ जाती है, और पुनः १५ दिनों के पश्चात भाव तेज हो जाते हैं। संसार पर युद्ध के बादल मंडराने लगते हैं। यदि बुध वैशाख मास में वृष राशि में आये तो रुई के भावों में पहिले १५ दिन भी मन्दी नहीं आती, रुई के भावों में आरम्भ से ही तेजी आ जाती है।

बृहस्पति यदि वृष राशि में आ जाय तो रुई के भावों में एक वर्ष के भीतर ही तेजी आ जाती है। अनाज महंगा हो जाता है। चैत्त मास में घी तेल तथा श्रावण मास में चने के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र यदि वृष राशि में आ जाय तो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है। रुई और चान्दी के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि वृष राशि में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाज और घी तेल आदि के भावों में तेजी आ जाती है, और राष्ट्रों में परस्पर युद्ध होता है।

राहु यदि वृष राशि में आ जाय तो रुई, तिल, तेल, कर्याणा, कपास, गुड़, कस्तूरी, कुंकुम आदि के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज का यदि संग्रह किया जाय तो पर्याप्त लाभ होता है।

वृष राशि में यदि राहु और मंगल दोनों एक साथ आ जायें, तो अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

३—मिथुन राशि में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि मिथुन राशि में आ जाये तो रुई के भाव गिर जाते हैं। चान्दी घी तेल कपास, का मूल तिल और हर प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है।

मिथुन राशि में सूर्य और बुध यदि एक साथ आ जाय तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि चन्द्रमा मिथुन राशि में आ जाय तो रुई के भावों में चार दिनों के भीतर तेजी आ जाती है।

यदि मंगल मिथुन राशि में आ जाय तो रुई खाण्ड शक्कर, लाल रंग की वस्तुयें अलसी ताम्बा कुसुम्बा, मजीठ, दूध दही, अफीम और सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। चान्दी के भावों में कोई विशेष घटा बढ़ी नहीं होती।

यदि मिथुन राशि में मंगल के साथ ही कोई और ग्रह भी आ जाय तो चान्दी के भाव गिर जाते हैं।

बुध यदि मिथुन राशि में आ जाय तो सोना चान्दी और रुई के भाव १५ दिनों के भीतर गिर जाते हैं।

गुरु यदि मिथुन राशि में आ जाय तो रुई के भाव गिर जाते हैं। सोना चान्दी, सूत कपड़ा, घी और तेल के भावों में तेजी आ जाती है। यदि यह वस्तुयें माग शीर्ष मास में क्रय करके बैसाख मास में विक्रय की जायें तो काफी लाभ होता है।

यदि शुक्र मिथुन राशि में आ जाय तो रूई सूत कपास कपड़े के भाव गिर जाते हैं। अलसी के भाव साधारण रहते हैं।

यदि शनि मिथुन राशि में आ जाये नमक तेल गुड़ लोहा आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है। मजीठ सोना बैल हाथी घोड़ा और ऊन के भाव गिर जाते हैं। पश्चिमी राष्ट्रों में परस्पर युद्ध होता है। सोने के भाव प्रायः गिर जाते हैं।

राहु यदि मिथुन राशि में आ जाये तो सर्व प्रकार के अनाज और घी के भावों में तेजी आ जाती है। सोने चाँदी के भाव गिर जाते हैं। रूई सस्ती हो जाती है। घी तथा धान्य के भाव सात मास के पश्चात गिर जाते हैं। सन और सूत महंगे रहते हैं।

४--कर्क राशि में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि कर्क राशि में आ जाय तो चाँदी के भावों में तेजी आ जाती है। यदि शुक्र भी सूर्य के साथ कर्क राशि में प्रवेश करे अथवा शुक्र के कर्क राशि में प्रवेश करते समय सूर्य पूर्व से कर्क राशि में स्थित हो अथवा सूर्य के प्रवेश करते समय शुक्र कर्क राशि में बैठा हुआ हो तो चान्दी के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

मंगल यदि कर्क राशि में आ जाय तो भैंसों की कीमत बढ़ जाती है। सर्व प्रकार के अनाज, गुड़, शक्कर आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है। रूई के भाव गिर जाते हैं।

बुध यदि कर्क राशि में आ जाय तो चान्दी के भाव तेज हो जाते हैं। रूई के भाव गिर जाते हैं। सोना सस्ता हो जाता है। खान्ड और अनाज के भाव साधारण रहते हैं। गुड़ में काफी घटा बढ़ी होती है। श्वेत वस्त्रों के भाव गिर जाते हैं।

गुरु यदि कर्क राशि में आ जाये तो रूई के भावों में तुरन्त तेजी आ जाती है, किन्तु यदि गुरु वक्री हो तो रूई के भाव गिर जाते हैं। गुड़ और घी के भाव तेज हो जाते हैं। व्यापारियों को चाहिये कि गुरु के कर्क राशि में आने पर गेहूँ चना अनाज आदि का संग्रह करे काफी लाभ होगा।

शुक्र यदि कर्क राशि में आ जाय तो रूई के भावों में प्रथम कुछ मन्दी आकर पश्चात तेजी आ जाती है। असली, अरन्ड, घी तेल, गुड़ खान्ड और शक्कर के भावों में तेजी आ जाती है। शेयरों के भाव भी बढ़ जाते हैं। चाँदी के भावों में मन्दी आ जाती है।

शनि यदि कर्क राशि में आ जाय तो रूई के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। मध्य प्रदेश में अकाल के लक्षण दृष्टि गोचर होने लगते हैं।

राहु यदि कर्क राशि में आ जाय तो रूई के भावों में मन्दी आ जाती है। सोना चाँदी ताम्बा आदि सर्व प्रकार की धातुयें छः मास के पश्चात महंगी हो जाती हैं। गेहूँ और चावल के भाव तेज हो जाते हैं।

स्मरण रहे कि किसी भी क्रूर ग्रह के उस समय कर्क राशि में आने से जबकि चन्द्रमा कर्क राशि का हो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

५-सिंह राशि में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि सिंह राशि में आ जाय तो रूई चांदी गुड़ खान्ड तिल तेल रत्न आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि सिंह राशि में आ जाय तो रूई चाँदी सोना ताम्बा **अलसी लाल वस्तुयें विशेष कर लाल मिर्च के भावों में तेजी आ**

आती है।

बुध यदि सिंह राशि में आ जाय तो रुई चाँदी सोना, सूत कपड़े, देवदारु और खट्टे पदार्थों के भावों में तेजी आ जाती है। शेयरों के भाव गिर जाते हैं। खान्ड शक्कर और कपूर आदि वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं।

गुरु यदि सिंह राशि में आ जाय तो रुई कपास गेहूँ लाल रंग की वस्तुओं के भावों में चार मासों के पश्चात अत्यधिक तेजी आ जाती है। व्यापारियों को चाहिए कि इन वस्तुओं को क्रय करके गुरु के सिंह राशि में आने के चार मास पश्चात विक्रय करें दुगुना लाभ होगा।

शुक्र यदि सिंह राशि में आजाय तो सोना, लाल रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है। लाल रंग के पशु भी मंहगे हो जाते हैं चांदी के भाव गिर जाते हैं। सर्व प्रकार के अनाजों के भाव तेज हो जाते हैं।

शनि यदि सिंह राशि में आ जाय तो गुड़ तेल, सरसों और तोरिया के भावों में तेजी आ जाती है। यदि शनि ८—८ अंश पर आ जाय तो रुई के भाव बढ़ जाते हैं।

राहु यदि सिंह राशि में आ जाय तो हल्दी सुन्ठी, काली मिर्च मधा के भावों में छः मास पश्चात तेजी आ जाती है। व्यापारियों को चाहिये कि इन वस्तुओं का क्रय करके शनि के सिंह राशि में आने के छः मास पश्चात विक्रय करें, लाभ होगा। अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

६—कन्या राशि में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि कन्या राशि में आ जाय तो रुई, श्री फल, तिल तेल और मजीठ आदि के भावों में तेजी आ जाती है। चांदी के भाव

गिर जाते हैं।

चन्द्रमा के कन्या राशि में आने से राई लोंग, मंजीठ के भाव बढ़ जाते हैं। रूई सस्ती हो जाती है।

मंगल के कन्या राशि में आने पर रूई, सोना, चांदी, अलसी, गेहूँ लाल वस्त्र तथा लाल वस्तुओं के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

बुध के कन्या राशि में आने से गेहूँ जौ, सोना, चना और खाण्ड के भावों में तेजी आ जाती है और रूई, तथा चाँदी के भाव गिर जाते हैं।

गुरु यदि कन्या राशि में आ जाय तो रूई, चांदी, ऊन कपड़े तथा धातुओं के भावों में मन्दी आ जाती है, जवार, चावल, मूंग गेहूँ धन्य घी खाण्ड शक्कर तिल तेल उरद चना गुड़ आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है। यदि व्यापारी कपास का संग्रह कर गुरु के कन्या राशि में आने के चार मास पश्चात बेचेंगे तो उन्हें काफी लाभ होगा। अनाज को बैसाख मास में खरीद कर भाद्र पद मास में वेचने से भी कफी लाभ होता है।

शुक्र यदि कन्या राशि में आ जाय तो रूई के भावों में मन्दी आ जाती है। अनाज, चावल, घास और चान्दी के भावों में तेजी आ जाती है।

शनि यदि कन्या राशि में आ जाय तो रूई और सर्व प्रकार के अनाज के भावों में तेजी आ जाती है। सोना और चाँदी के भाव गिर जाते हैं।

राहु अथवा केतु कन्या राशि में आ जाय तो सुगुन्धित वस्तुयें तथा रूई के भावों में तेजी आ जाती है। अलसी के भाव गिर जाते हैं।

यदि सौम्य ग्रह कन्या राशि में आ जायें तो रूई के भाव

गिर जाते हैं और यदि क्रूर ग्रह इस राशि में आ जायें तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बुध, गुरु और शुक्र एक साथ कन्या राशि में आ जायें तो रुई के भाव एक मास के भीतर ही भीतर गिर जाते हैं।

बुध के कन्या राशि में आने से अनाज सस्ता हो जाता है।

यदि मंगल और राहु कन्या राशि में एक साथ आ जायें तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि शनि, राहु और गुरु एक साथ कन्या राशि में आ जायें अथवा कन्या राशि में यह तीनों ग्रह इकट्ठे हो जायें तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है।

शनि और राहु यदि कन्या राशि में एक साथ आ जायें तो रुई के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

७—तुला राशि में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि तुला राशि में आ जाय तो सोना, ताम्बा, अलसी गेहूँ, आमला, मद्य और सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। रुई और चांदी के भाव गिर जाते हैं।

मंगल यदि तुला राशि में आ जाय तो रुई कपास, सूत, सन घी धान्य, उड़द मुंग गुड़, श्वेत वस्तुयें और सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। चान्दी के भावों में मन्दी आ जाती है।

सूर्य और मंगल यदि तुला राशि में एक साथ आ जायें तो रुई के भावों में एक दम तेजी आ जाती है।

बुध यदि तुला राशि में आ जाय तो रुई गुड़, खाण्ड अफीम

और सोने के भाव तेज हो जाते हैं। चांदी असली सरसों, खाण्ड बिनौला और मुगफली के भाव गिर जाते हैं। वर्षा पर्याप्त होती। विश्व में युद्ध छिड़ने की सम्भावना बनी रहती है।

गुरु यदि तुला राशि में आ जाय तो रूई के भाव बढ़ जाते हैं। घी, तेल, और धातुओं के भाव गिर जाते हैं। मजीठ, नारियल और सोने के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज चैत मास में महंगा हो जाता है। व्यापारियों को चाहिये कि पौष मास में अनाज खरीद कर चैत्र मास में बेचे, काफी लाभ होगा। गुड़ खाण्ड शक्कर आदि वस्तुओं का संग्रह करने से चौमासे में लाभ होता है।

शुक्र यदि तुला राशि में आ जाय तो सोने के भावों में तेजी आ जाती है। रूई चाँदी और अफीम में प्रथम कुछ तेजी आ कर बाद में मन्दी आ जाती है।

शनि यदि तुला राशि में आ जाय तो रूई और अनाजों के भावों में अत्याधिक तेजी आ जाती है। वर्षा न होने के कारण से अकाल पड़ जाता है।

यदि गुरु और शनि एक साथ तुला राशि में आ जायें तो रूई के भावों में एक दम तेजी आ जाती है।

राहु यदि तुला राशि में आ जाय तो और उसके आने से पूर्व यदि और भी कोई अन्य क्रूर ग्रह बैठा हुआ हो तो कृषि को अत्यन्त हानि होती है, और पृथ्वी पर महा भयंकर काल के लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

मंगल यदि तुला राशि में वक्री हो तो सर्व प्रकार की श्वेत वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती हैं।

८—वृश्चिक राशि में ग्रहों के आने से मार्केट में प्रभाव

सूर्य यदि वृश्चिक राशि में आ जाय तो रुई, ताम्बा चाँदी और गरम कपड़ों के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि वृश्चिक राशि में आ जाय तो रुई तथा सोना चाँदी आदि सर्व प्रकार की धातुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि वृश्चिक राशि में आ जाय तो रुई और चांदी के भावों में तेजी आ जाती है। पशुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं। सोना, अफीम घी तेल और अनाज के भावों में तेजी मन्दी आ जाती है।

गुरु यदि वृश्चिक राशि में आ जाय तो सोना चांदी ताम्बा काँसी, कपास, श्रीफल घी तेल के भावों में मन्दी आ जाती है। रुई के भाव पांच मास तक तेज रहते हैं। अनाज के भावों में भाद्रपद आश्विन और कातिक के मासों में तेजी आ जाती है। कपड़े के भाव गिर जाते हैं। घोड़े बैल और भैंस आदि पशु सस्ते हो जाते हैं।

शुक्र यदि वृश्चिक राशि में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में मन्दी आ जाती है। रुई शेयर चाँदी और अफीम के भाव प्रथम कुछ मन्दे होकर बाद में तेज हो जाते हैं। अलसी के भावों में भी तेजी आ जाती है।

शनि यदि वृश्चिक राशि में आ जाय तो रुई चाँदी के भाव गिर जाते हैं।

राहु यदि वृश्चिक राशि में आ जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

राहु और मंगल यदि दोनों एक साथ वृश्चिक राशि में आ जायें तो रंगीन वस्तुएँ और कर्याना के भावों में तेजी आ जाती है। कपड़ों में ५ मास के पश्चात काफी तेजी आ जाती है। व्यापारियों को चाहिये कि वस्त्र क्रय करके राहु और मंगल दोनों ग्रहों के वृश्चिक राशि में आने के ५ मास पश्चात् कपड़ा बेचें, काफी लाभ होगा।

राहु, मंगल और शुक्र, यदि तीनों ग्रह वृश्चिक राशि में आ जावें तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

६—धन राशि में आये हुये ग्रहों का मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि धन राशि में आ जाय तो रुई कपास, सूत चाँदी, तिल तेल आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

चन्द्रमा यदि धन राशि में आ जाय तो उस दिन वर्षा होती है, यदि उसी दिन अमृत नाड़ी पर शुभ ग्रह हों तो।

मंगल यदि धन राशि में आ जाय तो रुई चांदी, कपास, सूत बिनौला कपड़ा, घास लकड़ी घी और चौपायों के भावों में तेजी आ जाती है। रुई में तेजी बढ़ा घटी हो कर आती है, और घी तथा कपास प्रथक कुछ मन्दे होकर बाद में तेज होते हैं।

बुध यदि धन राशि में आ जाय तो रुई कपास, और चांदी के भावों में तेजी आ जाती है। राष्ट्रों में एक दूसरे के प्रति द्वेष फैलता "

गुरु यदि धन राशि में आ जाय तो रुई के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। घी सोना चांदी तिल गुड़ लोहा ताम्बा कांसी तथा श्वेत वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं। गेहूँ, गुड़, ईख और खांड की पैदावार काफी होती है, और इन वस्तुओं के भावों में

भी काफी मन्दी आ जाती है। व्यापारी यदि कातिक मास में घृत खरीद कर चैत मास में बेचेंगे तो काफी लाभ उठायेंगे।

शुक्र यदि धन राशि में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भाव बढ़ जाते हैं। शेयरों के भावों में तेजी आ जाती है। रूई और चांदी के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि धन राशि में आ जाय तो अकाल पड़ जाता है। अनाज अत्यधिक महंगे हो जाते हैं। वर्षा कभी नहीं होती। रस कस के भावों में मन्दी आ जाती है।

राहू यदि धन राशि में आ जाय तो हाथी घोड़े आदि पशु महंगे हो जाते हैं। सूत और कपड़े के भावों में पांच मास के पश्चात तेजी आ जाती है। अकाल पड़ जाता है। व्यापारियों को चाहिये कि सूत के कपड़े को खरीद कर राहु के धन राशि में आने के पांच मास के पश्चात बेचें, काफी लाभ होगा।

मंगल, धन अथवा मीन राशि में यदि वक्री हो कर आये तो घी और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

१०—मकर राशि में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि मकर राशि में आ जाय तो घी तेल और अलसी के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज के भाव गिर जाते हैं।

मंगल यदि मकर राशि में आ जाय तो रूई, सोना, चांदी, घी, तेल, अलसी और ऊन के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि मकर राशि में आ जाय तो सोना और चाँदी के भाव तेज हो जाते हैं।

गुरु यदि मकर राशि में आ जाय तो अनाज और रस के भावों में तेजी आ जाती है। सोना, चाँदी, ताम्बा, कपूर, चन्दन

आदि के भावों में मन्दी आ जाती है, किन्तु यही वस्तुएँ नर्मदा नदी के निकट वर्ती देशों में महँगी हो जाती हैं। रूई के भाव प्रथम थोड़े से गिर कर बाद में तेज हो जाते हैं।

शुक्र यदि मकर राशि में आ जाय तो गुड़, खांड, घी, गेहूँ, चना आदि सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। रूई, चांदी, शेयर और अफीम के भाव बढ़ जाते हैं।

शनि यदि मकर राशी में आ जाये तो रूई, सोना, चाँदी, ताम्बा कपास, सूत और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

राहु यदि मकर राशि में आ जाये तो अनाज, सूत और कांस के भावों में तीन मास के अनन्तर अत्याधिक तेजी आ जाती है। अतः जो व्यापारी इन वस्तुओं का संग्रह कर तीन मास के पश्चात बेचेगा उसे काफी लाभ होगा।

राहु के मकर राशि में स्थित होने पर जब २ भी चन्द्रमा इस राशि में आयेगा तब २ रूई के भावों में मन्दी आयेगी।

११—कुम्भ राशि में ग्रहों के आने से मार्केट पर प्रभाव

सूर्य यदि कुम्भ राशि में आ जाय तो अलसी, खाण्ड और अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है। घी और तेल के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि कुम्भ राशि में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। रूई और चाँदी में काफी घटा बढ़ी होती है।

बुध यदि कुम्भ राशि में आ जाय तो घी तेल आदि रस कस के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। रूई और अलसी के भाव गिर जाते हैं। चाँदी के भाव प्रथम कुछ गिर कर बाद में

तेज हो जाते हैं।

गुरु यदि कुम्भ राशि में आ जाए तो सोना, चान्दी, ताम्बा, कांसी पीतल लोहा और शीशा आदि वस्तुओं के भाव मन्दे हो जाते हैं। कृषि नष्ट हो जाती है। रूई के भाव छः मास तक तेज रहते हैं, किन्तु बाद में गिर जाते हैं।

जब गुरु कुम्भ राशि में स्थित हो और शनि अस्त हो तब रूई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि शुक्र कुम्भ राशि में आ जाए तो शेयरों के भावों में तेजी आ जाती है। रूई चांदी और अनाज के भाव मन्दे हो जाते हैं। यदि शुक्र कुम्भ राशि के २४ अंश पर हो तो रूई के भावों तेजी आ जाती है।

शुक्र के कुम्भ में स्थित होने पर यदि शनि हों तो शेयरों के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि कुम्भ राशि में हो तो रूई चांदी, अनाज और शेयरों के भावों में तेजी आ जाती है। यमुना नदी के निकट वर्ती देशों में अनाज में छटे मास से बारह मास तक तेजी आती है, और चौमासे के अन्त में भयंकर अकाल पड़ता है।

राहु यदि कुम्भ राशि में हो तो रूई के भावों में तेजी आ जाती है। शेयरों के भाव गिर जाते हैं। यदि राहु के साथ कोई दूसरा क्रूर ग्रह आ जाय तो सूत और गेहूं के भावों में छः मास पश्चात तेजी आ जाती है। व्यापारियों को चाहिये कि सूत और गेहूं का क्रय करें उनको छः मास के पश्चात लाभ होगा।

राहु के कुम्भ राशि में स्थित होने पर जब २ भी चन्द्रमा आयेगा रूई के भावों में मन्दी आवेगी।

यदि बुध और गुरु एक साथ कुम्भ राशि में आ जावें तो रूई के भावों में साधारण सी मन्दी आ जाती है।

१२—मीन राशि में ग्रहों के आने से मार्किट पर प्रभाव

सूर्य यदि मीन राशि में आ जाये तो सर्व प्रकार के अनाजों और तिल तेल के भावों में तेजी आ जाती है । चाँदी के भाव मीन संक्रान्ति के पश्चात थोड़े से गिर जाते हैं ।

मंगल यदि मीन राशी में आ जाय तो रूई, सोना घास, लकड़ी तथा चौपायों के भावों में तेजी आ जाती है । चाँदी प्रथम कुछ मन्दी होती है, किन्तु बाद में तेज हो जाती है ।

बुध यदि मीन राशि में आ जाय तो बिनौले के भावों में तेजी आ जाती है । रूई, चांदी और गेहूँ के भाव गिर जाते हैं ।

गुरु यदि मीन राशि में आ जाय तो रूई में प्रथम छः मासों में तेजी आकर अन्तिम छः मासों में मन्दी आ जाती है । घी तेल और तिल के भाव प्रथम कुछ मन्दे होकर बाद में तेजी हो जाते हैं । ईख, गेहूँ, शक्कर, गुड़, सोंठ नारियल, सफैद, कपड़े, हाथी दान्त, कपूर और नमक के भाव तेज हो जाते हैं । श्वेत वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं । यदि गुरु के वक्री होने से पूर्व रूई क्रय करके छः मास पश्चात विक्रय की जाय तो चौगुना लाभ होता है ।

शुक्र यदि मीन राशि में आ जाय तो चाँदी के भावों में प्रथम काफी तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है । रूई, गेहूँ और बिनौले के भाव गिर जाते हैं ।

शनि यदि मीन राशि में आ जाये तो गुड़, घी और अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है । पशु धन नष्ट हो जाता है ।

राहु यदि मीन राशि में आ जाय तो अकाल पड़ जाता है। यदि मंगल भी साथ में हो तो यह अकाल भयकंर रूप धारण कर लेता है। रुई के भावों में तेजी आ जाती है। किन्तु जब २ चन्द्रमा मीन में आता है तब २ रुई के भाव मन्दे हो जाते हैं। अलसी के भाव राहु के मीन में होने पर गिर जाते हैं।

यदि गुरु और शनि एक साथ मीन राशि में आ जायें तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

नक्षत्रों पर आये हुये ग्रहों का मार्कीट पर प्रभाव

अश्वनी नक्षत्र में आये हुये ग्रहों का प्रभाव

सूर्य यदि अश्वनी नक्षत्र में आ जाय तो रुई अलसी तिल तेल के भावों में तेजी आ जाती है। रुई प्रथम कुछ मन्दी हो कर बाद में तेज हो जाती है।

मंगल यदि अश्वनी नक्षत्र में आ जाय तो चना जवार, बाजरा आदि सब प्रकार के धान्य के भावों में तेजी आ जाती है। चान्दी के भाव गिर जाते हैं।

बुध यदि अश्वनी नक्षत्र में आ जाय तो घृत, गुड़ और चीनी के भावों में मन्दी आ जाती है। गेहूं जौ, चना, अलसी आदि धान्य के भाव तेज हो जाते हैं।

वृहस्पति यदि अश्वनी नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र यदि अश्वनी नक्षत्र में आ जाय तो अलसी के भाव दस दिनों के भीतर ही गिर जाते हैं।

शनि यदि अश्विनी नक्षत्र में आजाय तो तिल तेल घी गेहूँ गुड़ चावल, ज्वार, सरसों, मिर्च सूत आदि के भावों में एक मास में तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है।

भरणी नक्षत्र में आये हुये ग्रहों का मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि भरिणी नक्षत्र में आ जाय तो सोना चांदी तांबा पीतल आदि धातुओं के भावों में तेजी आ जाती है। गुड़ घी, खांड, चावल, जौ, चना, हल्दी, मिर्च, मोठ आदि के भाव १४ दिनों के भीतर ही भीतर तेज हो जाते हैं। रूई और अलसी के भाव गिर जाते हैं।

मंगल यदि भरिणी नक्षत्र में आ जाय तो रूई और सर्व प्रकार के अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि भरिणी नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भाव बढ़ जाते हैं।

बृहस्पति यदि भरिणी नक्षत्र में आ जाय तो सोना, चाँदी आदि धातुयें, हीरा मणि आदि रत्न, और अलसी, चावल मोठ, चना तूआर, लाखा चमड़ा और ऊन आदि के भाव गिर जाते हैं।

शुक्र यदि भरिणी नक्षत्र में आ जाय तो अलसी, तिल, तेल, घी उड़द, मूंग आदि के भाव तेज हो जाते हैं। रूई के भावों में तेजी आ जाती है।

शनि यदि भरिणी नक्षत्र में आ जाय तो राष्ट्रों में परस्पर युद्ध छिड़ जाता है।

कृतिका नक्षत्र में आये हुये ग्रहो का मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि कृत्तिका नक्षत्र में आ जाय तो रुई, सोना, चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, चना, जौं, चावल, और गेहूं आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि कृत्तिका नक्षत्र में आ जाय तो पक्ष में ही रुई के भाव गिर जाते हैं, और गेहूं के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि कृत्तिका नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है। वर्षा कम होने के कारण अनाज कम पैदा होता है। और अनाज के भाव तेज हो जाते हैं।

बृहस्पति यदि कृत्तिका नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

शुक्र यदि कृत्तिका नक्षत्र में आ जाय तो हीरा, मणि मोती, आदि रत्न और जौ तथा चावल के भावों में मन्दी आ जाती है।

शनि यदि कृत्तिका नक्षत्र में आ जाय तो अनाज के भाव गिर जाते हैं। सोना चांदी तांबा आदि धातुओं के भावों में तेजी आ जाती है लकड़ी के भाव चौगुने हो जाते हैं। व्यापारियों को चाहिये कि शनि के कृत्तिका नक्षत्र के ऊपर आने पर बेच दें, काफी लाभ होगा।

रोहिणी नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि रोहणी नक्षत्र में आ जाय तो रुई, तिल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, शक्कर, जवार, बाजरा, और ऊन के भाव में तेजी आ जाती है। चाँदी के भाव गिर जाते हैं। सरसों के भाव एक पक्ष के अनन्तर तेज हो जाते हैं। सुपारी, मिर्च और खजूर आदि के भावों में भी तेजी आ जाती है।

मंगल यदि रोहिणी नक्षत्र में आ जाय तो रुई, कपास, सूत, कपड़ा आदि के भावों में तेजी आ जाती है। शेयरों के भाव तेज हो जाते हैं।

बुध यदि रोहिणी नक्षत्र में आ जाय तो तिल, तेल, और रुई कपास तथा सूत के भाव में तेजी आ जाती है।

बृहस्पति यदि रोहिणी नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में काफी घटाबढ़ी होती है।

शुक्र यदि रोहिणी नक्षत्र में आ जाय तो सोना चांदी आदि धातुएं अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड के भावों में भारी मन्दी आ जाती है।

शनि यदि रोहणी नक्षत्र में आ जाय तो रुई कपास और सूत के भावों में तेजी आ जाती है। कपड़े की मार्कीट अत्यधिक ऊपर चढ़ जाती है।

मृगशिरा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि मृगशिरा नक्षत्र पर आ जाय तो रुई, उड़द, मूंग, मोठ और बाजरा के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। चांदी के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती हैं, और भाव एक स्थान पर स्थिर नहीं रहते।

मंगल यदि मृगशिरा नक्षत्र पर आ जाय तो रुई के भाव प्रथम कुछ मन्दे होकर बाद में अत्यन्त तेज हो जाते हैं। कपास और तिल की कृषि को अत्यधिक क्षति पहुँचती है।

बुध यदि मृगशिरा नक्षत्र में आ जाय तो वर्षा के पर्याप्त होने से धान्य की उपज अच्छी होती है, जिस से धान्य के भाव गिर जाते हैं। चाँदी में प्रथम कुछ साधारण सी तेजी आकर बाद

में मंदी आ जाती है। रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

बृहस्पति यदि मृगशिरा नक्षत्र में आ जाये तो अनाज के भावों में साधारण सी मंदी आ जाती है। रुई के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

शुक्र यदि मृगशिरा नक्षत्र में आ जाय तो गेहुँ चना और ज्वार के भावों में मन्दी आ जाती है।

शनि यदि मृगशिरा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार की व्यापार की वस्तुओं में अत्यधिक घटा बढ़ी होती रहती है।

आर्द्रा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि आर्द्रा नक्षत्र में आ जायं तो अलसी, अरण्ड, रस कस, रुई, कपास, सूत और कपड़े के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि आर्द्रा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। अलसी, अरंड, रसकस, रुई, कपास, सूत आदि के भाव भी तेज हो जाते हैं। यदि मंगल और सूर्य एक साथ आर्द्रा नक्षत्र में आ जायें अथवा इन दोनों में से किसी एक के आने पर दूसरा पहले से ही इसी नक्षत्र के ऊपर आया हुआ हो तो सर्व-प्रकार के अनाजों के भावों में एक मास तक तेजी रहती है, बाद में अनाजों के भाव गिर जाते हैं।

बुध यदि आर्द्रा नक्षत्र में आ जाय तो वायु और वर्षा अधिक होती है। गेहूँ, तिल, और उड़द के भावों में मन्दी आ जाती है।

बृहस्पति यदि आर्द्रा नक्षत्र में आ जाय तो सेन्धा नमक तथा अन्य सर्व प्रकार के लवण आदि के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भाव गिर जाते हैं।

शुक्र यदि आर्द्रा नक्षत्र में आ जाय तो आँधियाँ बहुत आती हैं

वर्षा काफी होती है।

शनि यदि आर्द्रा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में दो तीन मास पश्चात अत्यधिक तेजी आ जाती है। जो व्यापारी शनि के आर्द्रा नक्षत्र के ऊपर आने पर अनाज का क्रय करेंगे पुनः उसके दो तीन मास पश्चात बेचेंगे, वे काफी लाभ में रहेंगे।

पुनर्वसु नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि पुनर्वसु नक्षत्र में आ जाय तो रुई, अलसी, सरसों, अरण्ड, खसखस के भावों में तेजी आ जाती है। सोना चाँदी आदि धातुओं के भाव तेज हो जाते हैं। रुई कपास, तिल बिनौला, ज्वार, मोठ, बाजरा और उड़द के भावों में तेजी आ जाती है।

मगल यदि पुनर्वसु नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि पुनर्वसु नक्षत्र में आ जाय तो रुई कपास और सूत के भाव गिर जाते हैं।

बृहस्पति यदि पुनर्वसु नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। रुई कपास और सूत आदि के भाव गिर जाते हैं।

शुक्र यदि पुनर्वसु नक्षत्र में आ जाय तो रुई और सोना चाँदी के भावों में मन्दी आ जाती है। बिनौले तथा सर्व प्रकार के अनाजों के भाव तेज हो जाते हैं।

शनि यदि पुनर्वसु नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। रुई के भाव बढ़ जाते हैं। अकाल के कारण जनता में हा हा कार मच जाती है।

पुष्य नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि पुष्य नक्षत्र में आ जाय तो गेहूँ जौ, चावल और गुड़ खाण्ड शक्कर आदि के भावों में एक पक्ष के भीतर ही भीतर तेजी आ जाती है। सोना और चाँदी के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं। रूई के भावों में प्रथम कुछ तेजी आती है, किन्तु बाद में भाव गिर जाते हैं।

मंगल यदि पुष्य नक्षत्र में आ जाय तो रूई और सोना चांदी के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती है। इन वस्तुओं के भाव एक स्थान पर स्थिर नहीं रहते।

बुध यदि पुष्य नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार की वस्तुओं के भाव प्रायः गिर जाते हैं। सोना और चांदी के भावों में मन्दी आ जाती है। रूई में काफी घटा बढ़ी होकर बाद में भाव गिर जाते हैं। मणि मोती आदि रत्नों के भाव तथा ऊन के भाव भी गिर जाते हैं।

बृहस्पति यदि पुष्य नक्षत्र में आ जाय तो रूई के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

शुक्र यदि पुष्य नक्षत्र में आ जाय तो रूई, सूत, सन, रेशम ऊन और धान्य के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

शनि यदि पुष्य नक्षत्र में आ जाय तो अनाज की उपज काफी होती है, और अनाज कुछ सस्ता हो जाता है।

अश्लेषा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि अश्लेषा नक्षत्र में आ जाय तो सोना चांदी,

अलसी, एरण्ड और रसकस के भावों में तेजी आ जाती है। गेहूँ चावल, गुड़, शक्कर, घी, तेल, मिर्च, उड़द, चना, मजीठ, रुई और बिनौला के भाव १५ दिनों के भीतर तेज हो जाते हैं।

मंगल यदि अश्लेषा नक्षत्र के चौथे पाद में आ जाय तो चांदी के भावों में अत्यधिक मंदी आ जाती है, और रुई के भाव भी साधारण गिर जाते हैं।

बुध यदि अश्लेषा नक्षत्र में आ जाय तो वर्षा पर्याप्त होती हैं जिससे धान्य आदि की पैदावार काफी होती है, और धान्य आदि के भाव गिर जाते हैं रसकस के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरु यदि अश्लेषा नक्षत्र में आ जाय तो घी और तेल के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

शुक्र यदि अश्लेषा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। और रुई के भावों में साधारण सी मन्दी आ जाती है।

शनि यदि अश्लेषा नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है। वर्षा नहीं होती। युद्ध का आतंक छा जाता है, और शस्त्रों के भावों में तेजी आ जाती है।

मघा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि मघा नक्षत्र में आ जाय तो चांदी, रुई, कपास और तिल के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि मघा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। तिल और उड़द की

कृषि नष्ट हो जाती है। वर्षा बहुत ही कम होती है।

बुध यदि मघा नक्षत्र में आ जाय तो अनाज की कृषि नष्ट हो जाती है, अनाज अत्यधिक महंगा हो जाता है।

बृहस्पति यदि मघा नक्षत्र में आ जाय तो रुई, चांदी, गेहूं और अलसी के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती है, इनके भावों में स्थिरता नहीं आती।

शुक्र यदि मघा नक्षत्र में आ जाय तो वर्षा अधिक होती है।

शनि यदि मघा नक्षत्र में आ जाय तो व्यापारियों को चाहिये कि घोड़े और हाथियों का व्यापार करें, काफी लाभ होगा।

जब शनि मघा नक्षत्र के ऊपर आये और चन्द्र, मंगल, बुध तथा गुरु यह चारों ग्रह पहले से ही मघा नक्षत्र के ऊपर स्थित हों तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है।

पूर्वाफल्गुन में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में आय तो सोना और सूत के भावों में तेजी आ जाती है। चांदी में एक मास में घटा बढ़ी आ कर बाद में तेजी आ जाती है। गेहूँ, चावल, घी सरसों, तेल, ऊनी वस्त्र, अफीम, रुई और कपास के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि पूर्वाफल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो तिल और तेल के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

बुध यदि पूर्वाफल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

बृहस्पति यदि पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है।

शुक्र यदि पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो गेहूँ, चना, जौ, जवार और बाजरा के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो संसार में भयंकर विश्व युद्ध छिड़ जाता है।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो अलसी ज्वार के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, सरसों, रुई कपास, उड़द, एरण्ड, चावल और मघ के भावों में दो सप्ताहों के भीतर तेजी आ जाती है।

मंगल यदि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो संसार में लड़ाई झगड़े अत्यधिक होते हैं।

बुध यदि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो उड़द और मघ की पैदावार बहुत ही कम होती है, और उड़द तथा मघ के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। रुई के भावों में प्रथम काफी घटा बढ़ी होती है, किन्तु बाद में मन्दे हो जाते हैं।

वृहस्पति यदि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भाव प्रथम अत्यधिक तेज हो कर बाद में मन्दे हो जाते हैं यदि रुई के भाव प्रथम मन्दे होंगे तो फिर बाद में तेज हो जायेंगे।

शुक्र यदि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो गेहूँ की कृषि को काफी क्षति पहुँचती है, और गेहूँ के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

शनि यदि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती है।

राहु यदि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आ जाय तो काली वस्तुएँ, लोहा, शीशा, काला कपड़ा, गुड़, खाण्ड चावल और गेहूँ के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है रुई और अलसी के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है।

हस्त नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि हस्त नक्षत्र में आ जाय तो गेहूँ, जौ, कपास, गुड़, खाण्ड, जावर हल्दी, घास लकड़ी के भावों में दो सप्ताहों के भीतर अत्यधिक तेजी आ जाती है।

मंगल यदि हस्त नक्षत्र में आ जाय तो घी के भाव गिर जाते हैं। वर्षा कम होने से अनाज की पैदावार काफी होती है, और अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

बुध यदि हस्त नक्षत्र में आ जाय तो अनाज की पैदावार काफी होती है, और अनाज सस्ता हो जाता है।

बृहस्पति यदि हस्त नक्षत्र में आ जाय तो प्रायः सर्व प्रकार की वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं। रुई, गुड़, खाण्ड शक्कर घी, तेल, रसकस तथा मोतियों के भावों में विशेष कर मन्दी आ जाती है।

शुक्र यदि हस्त नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि हस्त नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। देश में अकाल पड़ जाता है।

राहु यदि हस्त नक्षत्र में आ जाय तो अनाज के भाव गिर जाते हैं। गुड़, खाण्ड, घी, चावल और तेल के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

चित्रा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि चित्रा नक्षत्र में आ जाय तो सोना, चाँदी, मोती आदि रत्नों के भावों में तेजी आ जाती है। रुई, सूत, कपास, गेहूँ, चना, गुड़, शक्कर और खाण्ड के भाव बढ़ जाते हैं। नारियल और तिल के भावों में दस दिनों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि चित्रा नक्षत्र में आ जाय तो सोने के भावों में तेजी आ जाती है। गेहूँ चावल और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि चित्रा नक्षत्र में आ जाय तो वर्षा बहुत कम होती होती है। रुई के भावों में पहले काफी घटा बढ़ी होती है, और बाद में तेज हो जाते हैं।

वृहस्पति यदि चित्रा नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र यदि चित्रा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार की वस्तुओं के भावों में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। साधारण सी घटा बढ़ी होती है।

शनि यदि चित्रा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। शेयरों के भाव गिर जाते हैं।

स्वाती नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि स्वाती नक्षत्र में आ जाय तो सूत, कपड़ा, बारदाना, सन और रेशम के भावों में तेजी आ जाती है। सोना और चाँदी के भाव बढ़ जाते हैं रुई, बिनौले सस्ते होते हैं। हींग,

सुपारी, गुड़, शक्कर, कर्याना, लाख, चपड़ा और गुग्गुल के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि स्वाती नक्षत्र में आ जाय तो ऊनी कपड़े, रुई, धातुएं और गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि स्वाती नक्षत्र में आ जाय तो वर्षा बहुत कम होती है।

वृहस्पति यदि स्वाती नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है, और भाव स्थिर नहीं रहते।

शुक्र यदि स्वाती नक्षत्र में आ जाय तो रसकस के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि स्वाती नक्षत्र में आ जाय तो राजाओं पर विपत्तियाँ आती हैं।

विशाखा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि विशाखा नक्षत्र में आ जाय तो अलसी और चांदी के भावों में प्रथम कुछ मन्दी आकर बाद में तेजी आ जाती है। धातुएँ, तिल और अफीम के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं। जौ, चावल गेहूँ, मसूर मद सरसों और खाण्ड के भावों में दो सप्ताहों के भीतर तेजी आ जाती है।

मंगल यदि विशाखा नक्षत्र में आ जाय तो रुई, कपास और गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि विशाखा नक्षत्र में आ जाय तो धान्य सस्ता हो जाता है।

वृहस्पति यदि विशाखा नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

शुक्र यदि विशाखा नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि विशाखा नक्षत्र में आ जाय तो राजाओं पर विपत्तियाँ आती हैं।

अनुराधा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि अनुराधा नक्षत्र में आ जाय तो गेहूँ, अलसी, मिर्च आदि वस्तुओं के भाव प्रथम कुछ तेज हो कर बाद में गिर जाते हैं। सोने और चान्दी के भावों में दो सप्ताहों में मन्दी आ जाती है। ऊन, रस और चना आदि सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि अनुराधा नक्षत्र में आ जाय तो संसार में दुःख फैलता है।

बुध यदि अनुराधा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार की वस्तुएं और विशेष कर अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

बृहस्पति यदि अनुराधा नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती है।

शुक्र यदि अनुराधा नक्षत्र में आ जाय तो रोग अत्यधिक फैलते हैं, और भूकम्प से अधिक हानियाँ होती हैं।

शनि यदि अनुराधा नक्षत्र में आ जाय तो पश्चिमी देशों में परस्पर युद्ध छिड़ जाता है, और युद्ध में भीषण जन संहार होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो रुई, सून, कपास के

भावों में प्रथम कुछ तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है। सोना, चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड गुग्गुल, पारा, चावल, गुड़ और खाण्ड के भावों में दो सप्ताहों के भीतर तेजी आ जाती है।

मंगल यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है।

बुध यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो घी और धान्य के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

बृहस्पति यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाज के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है।

शुक्र यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो सोना और चान्दी के भाव गिर जाते हैं। सर्व प्रकार के अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

शनि यदि ज्येष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो पश्चिमी राष्ट्रों में परस्पर युद्ध के कारण भीषण जन संहार होता है।

मूला नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि मूला नक्षत्र में आ जाय तो रुई, सूत, कपास के भाव प्रथम तेज होते हैं, किन्तु बाद में फिर गिर जाते हैं।

मंगल यदि मूला नक्षत्र में आ जाय तो धान्य के भावों में साधारण सी तेजी आ जाती है।

बुध यदि मूला नक्षत्र में आ जाय तो पशुओं में रोग फैलते हैं, जिससे पशुओं के भाव कुछ गिर जाते हैं।

बृहस्पति यदि मूला नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती है।

शुक्र यदि मूला नक्षत्र में आ जाय तो अनाज के भावों में घटा बढ़ी होती रहती है।

शनि यदि मूला नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भाव तेज होने लगते हैं। व्यापारियों को चाहिये कि शनि के मूला नक्षत्र में आने पर अनाज का संग्रह करे, काफी लाभ होगा।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्केट पर प्रभाव

सूर्य यदि पूर्वाषाढा नक्षत्र में आ जाय तो बिनौला, तिल, तेल, घी, खाण्ड, शक्कर, गुड, चावल, गेहूँ, चना, चांदी, हल्दी, ऊन के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि पूर्वाषाढा नक्षत्र में आ जाय तो वर्षा अधिक होती है। घी, तेल और धान्य के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि पूर्वाषाढा नक्षत्र में आ जाय तो बिनौले के भावों में तेजी आ जाती है। धान्य के भाव गिर जाते हैं।

बृहस्पति यदि पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में आ जाय तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

शुक्र यदि पूर्वाषाढा नक्षत्र में आ जाय तो मघ, मोठ और उड़द के भावों में तेजी आ जाती है। गुड़, खाण्ड और शक्कर आदि वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

शनि यदि पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में आ जाय तो लकड़ी के भावों में बाद में काफी तेजी आ जाती है।

उत्तराषाढा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में आ जाय तो रुई और खाण्ड के भावों में तेजी आ जाती है। उड़द, मध, गुड़, चावल, कपास, सरसों, अलसी, चना, घी और लोहा आदि धातुओं के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में आ जाय तो घी, तेल, उड़द और धान्य के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि उत्तराषाढा नक्षत्र में आ जाय तो धान्य की पैदावार काफी होती है, और धान्य सस्ता हो जाता है।

बृहस्पति यदि उत्तराषाढा नक्षत्र में आ जाय तो गुड़ के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र यदि उत्तराषाढा नक्षत्र में आ जाय तो अलसी, एरण्ड और रसकस के भावों में मन्दी आ जाती है। रुई के भावों में घटा बढ़ी होती रहती है।

शनि यदि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में आ जाय तो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है और यह तेजी कोई सात मास तक रहती है। वर्षा बहुत कम होती है।

श्रवण नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि श्रवण नक्षत्र में आ जाय त [illegible] और रसकस के भावों में तेजी आ जाती है। अलसी के भाव बढ़

जाते हैं। गेहूँ, जौ, चावल, सुपारी, लौंग, शक्कर और पीपरी के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि श्रवण नक्षत्र में आ जाय तो अफीम, तिल, जौ और धातु के भावों में तेजी आ जाती है। गेहूँ के भाव तीन सप्ताहों में अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

बुध यदि श्रवण नक्षत्र में आ जाय तो चने की उपज नष्ट हो जाती है। गुड़, अलसी और चने के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

बृहस्पति यदि श्रवण नक्षत्र में आ जाय तो अलसी के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

शुक्र यदि श्रवण नक्षत्र में आ जाय तो सोना, चांदी, गुड़, शक्कर और धान्य के भावों में मंदी आ जाती है। रुई और तिल तथा तेल के भावों में तेजी आ जाती है।

शनि यदि श्रवण नक्षत्र में आ जाय और मंगल तथा राहु भी यदि उसके साथ हों तो गेहूँ के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। अलसी और अनाज के भाव भी तेज हो जाते हैं।

यदि श्रवण नक्षत्र के ऊपर बुध और शुक्र एक साथ आ जायें तो रुई, चाँदी और अनाज के भाव गिर जाते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्केट पर प्रभाव

सूर्य यदि धनिष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो रुई सोना-चाँदी आदि धातुएँ, मोती, लाल मणि आदि रत्न तथा गेहूँ आदि धान्यों के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि धनिष्ठा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो गुड़, खान्ड, अनाज, घी, रूई तथा सूत के भाव तीन सप्ताहों में तेज हो जाते हैं।

बुध यदि धनिष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो घोड़ा आदि पशुओं में रोग फैल जाते हैं।

बृहस्पति यदि धनिष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो रूई के भावों में घटा बढ़ी होती रहती है।

शुक्र यदि धनिष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो चांदी, चावल, मद्य, मोठ, और उड़द आदि के भावों में तेजी आ जाती है। गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि धनिष्ठा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में और विशेष कर गेहूँ, चावल, मोठ, मसूर और जौ के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शनि, मंगल और शुक्र एक साथ धनिष्ठा नक्षत्र के ऊपर आ जायें तो अनाज के भाव में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

शतभिषा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि शतभिषा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो रूई, सूत, कपड़ा, गुड़, खांड सरसों, एरन्ड, तिल, तेल, हल्दी और कर्याना के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि शतभिषा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो कृषि को हानि पहुँचती है और प्रायः सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि शतभिषा नक्षत्र में आ जाय तो वर्षा अधिक होती है।

बृहस्पति यदि शतभिषा नक्षत्र में आ जाय और उस समय मंगल चित्रा नक्षत्र के ऊपर हो तो अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

शुक्र यदि शतभिषा नक्षत्र में आ जाय तो गेहूं, चावल, गुड़, घी, खांड के भाव तेज हो जाते हैं।

शनि यदि शतभिषा नक्षत्र में आ जाय तो रूई, कपास, सोना, चाँदी गेहूँ, चना, जवार, बाजरा, चावल, गुड़, खाँड के भाव तेज हो जाते हैं।

पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य यदि पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में आ जाय तो रूई, कपास, सोना, चांदी, गेहूँ, चना, जवार, बाजरा, चावल, गुड़, खांड, शक्कर, घी, तिल और उड़द के भाव में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में आ जाय तो सोना, चांदी, रूई सूत, कपास के भावों में तेजी आ जाती है। तिल, तेल, सुपारी, एरन्ड और अलसी के भाव भी तेज हो जाते हैं।

बुध यदि पूर्वा भाद्र पदा नक्षत्र में आ जाय तो रूई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती है।

बृहस्पति यदि पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो रूई के भावों में मन्दी आ जाती है।

शुक्र यदि पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो रूई के भावों में तेजी आ जाती है।

शनि यदि पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो वर्षा अत्यधिक होती है।

उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्केट पर प्रभाव

सूर्य यदि उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो चन्दन, चावल, गुड़, शक्कर खाँड आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो चन्दन, कपूर, देवदारू आदि सुगन्धित वस्तुओं के भावों तथा धान्यों के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र में आ जाय तो चांदी के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती है।

बृहस्पति यदि उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में आ जाय तो चावल और चाँदी के भावों में मन्दी आ जाती है।

शुक्र यदि उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में आ जाय तो सर्व प्रकार की श्वेत वस्तुएं, और विशेष कर चावल, मोती, कपूर आदि के भावों में मन्दी आ जाती है।

शनि यदि उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो चाँदी, चन्दन, केशर और कुंकुम के भावों में तेजी आ जाती है।

रेवती नक्षत्र में ग्रहों के आने से मार्केट पर प्रभाव

सूर्य यदि रेवती नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो अलसी, सरसों, एरन्ड और मूंगफली के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल यदि रेवती नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो सर्व प्रकार के धान्यों के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध यदि रेवती नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो वायदे की वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

बृहस्पति यदि रेवती नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो रुई के भाव में काफी घटा बढ़ी होती रहती है।

शुक्र यदि रेवती नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो रुई, कपास, चन्दन कपूर और रत्नों के भाव गिर जाते हैं।

शनि यदि रेवती नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। व्यापारियों को चाहिए कि शनि के रेवती नक्षत्र में आने से पूर्व अनाज का क्रय करें, काफी लाभ होगा। उड़द, मूंग और तमाकू के भाव भी तेज हो जाते हैं।

मार्गी ग्रहों का मार्कीट पर प्रभाव

ग्रहों के मार्गी हो जाने पर जिन वस्तुओं के भाव तेज होते हैं, वे मन्दी हो जाती हैं, और जो वस्तुएं पहले मन्दी होती हैं उनके भावों में तेजी आ जाती है।

किसी क्रूर ग्रह के अतिचारी हो जाने से अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

मंगल जब मार्गी हो जाता है, तो उसके तीन दिन पश्चात् रुई के भाव अत्यधिक गिर जाते हैं। तेल मद्य और चांदी के भावों में अत्यन्त तेजी आ जाती है।

बुध जब मार्गी हो जाता है, तो गेहूं, जौ, चना आदि अनाज के भावों में एक सप्ताह में तेजी आ जाती है, और एक सप्ताह में अलसी, एरण्ड, तेल, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं। रुई के भावों में पहले कुछ मन्दी आती है किन्तु बाद में तेज हो जाते हैं। चान्दी के भावों में घटाबढ़ी होकर तेजी तथा शेयरों के भावों में मन्दी आ जाती है।

जब बृहस्पति मार्गी हो जाता है, तो चांदी के भाव गिर जाते हैं। अलसी और सरसों के भावों में एक सप्ताह में तेजी आ जाती है। तमाकू और चावल के भाव बढ़ जाते हैं। रुई में ३ दिनों में मन्दी आकर बाद में तेजी आ जाती है।

जब शुक्र मार्गी हो जाता है तो सोना और चांदी के भावों में पाँच दिनों के पश्चात तेजी आ जाती है। रुई के भाव चार दिनों के पश्चात गिर जाते हैं। व्यापारियों को चाहिये कि घी, गुड़ और धान्य का संग्रह करें, काफी लाभ होगा।

जब शनि मार्गी हो जाता है तो शेयरों के भाव गिर जाते हैं। चाँदी के भाव में मन्दी आ जाती है। रुई के भावों में तेजी आ जाती है तिल, सरसों, हींग, मिर्च आदि वस्तुओं में तेजी दो मास पश्चात आती है।

यदि सोमवार अथवा बृहस्पति वार के दिन शनि मार्गी हो जाय तो रुई के भाव पाँच दिनों के भीतर ही गिर जाते हैं।

वक्री ग्रहों का मार्केट पर प्रभाव

सूर्य के वक्री हो जाने पर जिस वस्तु के भाव शीघ्रता से बढ़ते चले जा रहे हों तो वह वस्तु मन्दी होनी आरम्भ हो जाती है।

जब मंगल वक्री हो जाता है रुई, सोना, चाँदी, अलसी और गेहूँ के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

यदि मंगल धनु अथवा मीन राशि में आकर वक्री हो जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। यदि मकर राशि में आकर वक्री हो तो अफीम के भावों में दो तीन मास के पश्चात तेजी आ जाती है। यदि वक्री तुला राशि में आकर हो जाय तो सर्व प्रकार की श्वेत वस्तुओं के भावों तथा रस कस के भावों में तेजी आ जाती है।

जब बुध वक्री हो जाता है तो रुई के भावों में प्रथम कुछ तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है। शेयरों के भाव तेज हो जाते हैं। घी, गुड़, खांड, शक्कर, कपूर, तिल, तेल, बिनौला, एरण्ड, मूंगफली आदि वस्तुओं के भावों में तीन सप्ताहों में तेजी आ जाती है। गेहूँ, जौ, और चना आदि अनाज के भाव गिर जाते हैं। चान्दी के भावों में पहले कुछ मन्दी आकर बाद में तेजी आ जाती है।

यदि बुध वक्री होकर अस्त हो जाय तो चान्दी के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बुध और गुरु एक साथ वक्री हो जाएं तो चान्दी के भाव तेज हो जाते हैं। गेहूँ, जौ, चन्ना, अलसी, सरसों और तिल आदि के भावों में एक मास में मन्दी आ जाती है। गेहूँ के भाव अत्यधिक गिर जाते हैं।

यदि बुध और शुक्र एक साथ वक्री हो जाएं तो एक मास के भीतर ही भीतर गेहूँ के भावों में मन्दी आ जाती है। जो व्यापारी इस मन्दी में गेहूँ का क्रय करेंगे उन्हें बाद में काफी लाभ होगा।

बुध गुरु और शुक्र यदि ये तीनों ग्रह एक साथ वक्री हो जायें तो चान्दी के भावों में अत्यधिक मन्दी आ जाती है।

बुध वक्री कन्या में स्थित हो, और फिर उन्ही दिनों चौमासा हो तो सर्व प्रकार के अनाजों के भाव गिर जाते हैं। यदि बुध शीघ्र गामी होगा तो अनाज के भावों में थोड़ी सी तेजी आ जायेगी।

बुध गुरु और शुक्र जब ये तीनों ग्रह सूर्य के साथ मिल कर वक्री होते हैं तो शेयरों के भाव गिर जाते हैं और शेयरों के भाव इन तीनों वक्री ग्रहों के सूर्य के साथ युत होने से पूर्व तेज हों।

जब गुरु वक्री हो जाता है तो रुई के भाव गिर जाते हैं, यदि वक्री गुरु मकर राशि में स्थित हो तो रुई के भावों में और भी

मन्दी आ जाती है जो व्यापारी इस मन्दी के समय रुई का क्रय करेगा उसको बाद में काफी लाभ होगा । चान्दी के भावों में साधारण सी तेजी आ जाती है। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि सर्व प्रकार के धान्यों के भावों में मन्दी आ जाती है। सोना चाँदी आदि धातुएं और ऊनी कपड़ों के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

यदि मीन राशि में स्थित गुरु वक्री हो जाय अथवा गुरु वक्री होकर मीन राशि में आ जाय तो रुई के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

यदि गुरु वक्री हो कर मीन राशि से कुम्भ राशि में चला जाय तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है ।

यदि वक्री गुरु मघा नक्षत्र के ऊपर हो तो घी के भाव में तेजी आ जाती है ।

यदि गुरु और शनि एक एक साथ वक्री हों तो रुई के भाव अत्यधिक गिर जाते हैं।

जब शुक्र वक्री हो जाता है तो रुई के भाव प्रथम कुछ तेज हो कर बाद में गिर जाते हैं। सोना और चांदी के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, जौ, चना आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र अथवा शनि के वक्री हो जाने पर रुई, कपड़ा, सूत आदि के भावों में प्रथम अत्यधिक तेजी आ कर बाद में मन्दी आ जाती है।

जब शनि वक्री होता है तो रूई के भावों में मन्दी आ जाती है। शीशा और कई के भाव तेज हो जाते हैं। गेहूं, मद्य, ज्वार, अलसी, सरसों, घी, तेल, कपड़ा और तमकू के भावों में तेजी आ जाती है। सोना और चांदी के भावों में तेजी और शेयरों के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि शनि वक्री हो कर गुरु के साथ अपनी राशि पर आ जाय तो गेहूँ तिल और तेल आदि के भावों में कई पौन वर्ष तक तेजी रहती है।

वक्री शनि के धन राशि में आने पर शेयरों के भावों में प्रथम तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है। यदि शनि वक्री हो कर तुला राशि में आजाये तो शेयरों के भाव दो मास तक तेज रहते हैं और फिर बाद में मन्दे हो जाते हैं।

यदि शनि वक्री होकर ज्येष्ठा अथवा अनुराधा नक्षत्र के ऊपर आ कर वक्री हो जाय तो सर्व प्रकार की वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि वक्री शनि मघा अथवा अश्लेषा नक्षत्र के ऊपर हो तो गेहूं चावल और घी के भावों में तेजी आ जाती है।

भिन्न भिन्न राशियों पर वक्री गुरु के आने से मार्कीट पर प्रभाव

यदि मेष राशि स्थित वक्री गुरु मीन राशि में चला जाय तो गाय भैंस आदि पशुओं के भाव आषाढ़ तथा श्रावण मास में गिर जाते हैं। तेल आदि वस्तुओं के भाव भाद्रपद और आश्विन मास में दो मास तक तेज रहते हैं।

यदि वृष राशि स्थित गुरु के वक्री हुए पांच मास बीत जायें तो बैल आदि पशु महंगे हो जाते हैं। सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में ८ मास तक तेजी रहती है। व्यापारियों को चाहिए कि श्रावण से आश्विन तक सर्व प्रकार के अनाजों तथा पशुओं का विक्रय करें, काफी लाभ होगा।

गुरु जब वक्री हो कर मिथुन राशि पर आता है तो आठ मास तक पशु महंगे रहते हैं।

गुरु जब वक्री हो कर कर्क राशि पर आता है रुई, कपास, सूत, तेल, घी और गुड़ तथा खाण्ड के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज के भावों में मार्गशीर्ष मास तक काफी तेजी रहती है।

गुरु जब वक्री होकर सिंह राशि पर आता है तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में नौ मास तक तेजी रहती है। व्यापारियों को चाहिये कि वक्री गुरू के सिंह राशि में आ जाने पर अनाज का क्रय करें और जब वक्री गुरु सिंह राशि में आ जाय तो नौ मास तक अनाज का विक्रय करें काफी लाभ होगा।

गुरु जब वक्री होकर कन्या राशि में आ जाय तो रुई, कपास नमक और सर्व प्रकार की सुगन्धित वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरू जब वक्री हो कर वृश्चिक राशि में आ जाता है तो अनाज के भावों में दस मास पश्चात तेजी आ जाती है। घी और कपास के भाव मार्गशीर्ष मास में तेज हो जाते हैं। व्यापारियों को चाहिये कि वक्री गुरु के वृश्चिक राशि में आने के दस मास पश्चात् अनाज को बेचें, तथा घी और कपास का विक्रय मार्गशीर्ष मास में करें, काफी लाभ होगा।

गुरु जब वक्री हो कर धनु राशि में आता है तो गेहूँ चना आदि सर्व प्रकार के धान्यों के भावों में चैत्र मास में मन्दी और मार्गशीर्ष मास में तेजी आ जाती है गुड़ नमक आदि वस्तुओं के भाव भी चैत्र मास से मार्गशीर्ष तक मन्दे रहते हैं। जो व्यापारी इन वस्तुओं को चैत्र मास में खरीद कर मार्गशीर्ष मास में बेचेंगे वे काफी लाभ में रहेंगे।

गुरु जब वक्री होकर मकर राशि में आ जाता है तो अनाज के भाव गिर जाते हैं।

गुरु जब वक्री हो कर कुम्भ राशि में आ जाता है तो सर्व

प्रकार के अनाजों की पैदावार अच्छी होती है। व्यापारियों को चाहिए वक्री गुरु के कुम्भ राशि में आने पर अनाज तुरन्त बेच डालें, अन्यथा हानि होगी, घी तेल आदि के भावों में आठ मास के पश्चात् तेजी आ जाती है। अतः तेल और घी का संग्रह कर आठ मास के पश्चात् बेचने से काफी लाभ होता है।

गुरु जब वक्री हो कर मीन राशि में आ जाता है तो घी, तेल, नमक, गुड़, खाण्ड कपास और धान्य के भावों में तेजी आ जाती है।

मार्कीट पर ग्रहों के उदयास्त होने का प्रभाव

मंगल के उदय होने का मार्कीट पर प्रभाव

मंगल जब उदय होता है तो अनाज के भाव गिर जाते हैं। रुई के भावों में तेजी आ जाती है। तिल तेल और उड़द के भाव में पाँच दिनों में तेजी हो जाती है।

मंगल के अस्त होने पर मार्कीट का प्रभाव

मंगल जब अस्त होता है तो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है, और रुई के भाव गिर जाते हैं। गेहूँ और असली के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। जौ, चना, और गुड़ के भाव तेज हो जाते हैं।

बुध के उदय होने का मार्कीट पर प्रभाव

बुध जब पूर्व में उदय होता है तो गेहूँ, जौ, चना, खाण्ड, बिनौला अलसी तिल घी और लाल मिर्च के भावों में तेजी आ जाती है। सोने के भाव में मन्दी आ जाती है, अनाज के भाव

गिर जाते हैं। रुई के भाव प्रथम कुछ गिर कर बाद में तेज हो जाते हैं।

बुध जब पश्चिम दिशा में उदय होता है तो रजत के भावों में तेजी आ जाती है। चावल, धान्य, घी, तेल, खाण्ड, बिनौला, और सरसों के भावों में तेजी आ जाती है। तेल महंगा हो जाता है। रुई और शेयर के भाव गिर जाते हैं। असली के भावों में काफी घटा बढ़ी होती रहती है।

यदि बुध उदय होते समय मार्गी हो तो चाँदी के भावों में तेजी आ जाती है।

जब बुध गुरु और शुक्र एक साथ उदय होते हैं तो चाँदी के भाव गिर जाते हैं।

स्मरण रहे कि बुध के उदय होते समय जिन वस्तुओं के भावों में तेजी आयेगी, उन्हीं वस्तुओं के भावों में बुध के अस्त होते समय मन्दी आ जाएगी।

भिन्न २ मासों में बुध के उदय होने से मार्केट पर प्रभाव

जब बुध कार्तिक मास में उदय होता है तो तिल और सर्व प्रकार के अनाज के भावों मे तेजी आ जाती है।

बुध मार्गशीर्ष मास में उदय होता है तो कपास की पैदावार बहुत ही थोड़ी होती है और कपास के भावों में तेजी आ जाती है।

जब बुध आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष में उदय होता है और श्रावण मास में अस्त होता है तो अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

बुध जब चैत्र मास में उदय होकर श्रावण मास में अस्त होता है तो वर्षा का अभाव रहता है।

बुध के भाद्रपद अथवा आश्विन मास में उदय होने से वर्षा काफी होती है।

बुध के भिन्न २ राशियों में उदय होने से मार्कीट पर प्रभाव

बुध जब मेष राशि में उदय होता है तो अनाज के भाव में तेजी आ जाती है। अलसी और चान्दी के भाव गिर जाते हैं।

बुध के वृष राशि में उदय होने से वर्षा काफी होती है।

बुध के मिथुन राशि में उदय होने से वर्षा बहुत कम होती है या होती ही नहीं।

बुध के सिंह राशि में उदय होने से भैंसों का नाश होता है।

बुध के कन्या राशि में उदय होने से अनाज की पैदावार काफी होती है।

बुध के तुला राशि में उदय होने से भूकम्प अधिक आते हैं।

बुध जब धन राशि में उदय होता है तो गुड़ और तेल के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध जब मकर राशि में उदय होता है तो अनाज की पैदावार अधिक होती है।

बुध के मीन राशि में उदय होने से वर्षा का अभाव रहता है।

बुध के अस्त होने का मार्कीट पर प्रभाव

बुध जब पूर्व दिशा में अस्त होता है तो सोने के भावों में

प्रथम कुछ साधारण सी मन्दी आ कर बाद में तेजी आ जाती है। गेहूँ, चावल अलसी और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भावों में घटा बढ़ी होती।

बुध जब पश्चिम दिशा में अस्त होता है तो पाट सियन और शेयरों के भाव गिर जाते हैं। चांदी के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भाव गिर जाते हैं।

बुध के अस्त होने पर जिन वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है, उन्हीं वस्तुओं के भाव बुध के उदय होने पर गिर जाते हैं, और जिन वस्तुओं के भाव बुध के अस्त होने पर गिर जाते हैं, उन्हीं वस्तुओं के भावों में बुध के उदय होने पर तेजी आ जाती है।

यदि बुध गुरु और शुक्र में से कोई भी एक ग्रह अस्त हो जाय तो चाँदी के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरु के उदय होने से मार्कीट पर प्रभाव

गुरु जब उदय होता है तो चान्दी के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भाव गुरु के उदय होते समय यदि तेज हो तो मन्दे हो जाते हैं और यदि मन्दे हों तो तेज हो जाते हैं।

यदि गुरु उदय होकर मार्गी हो जाय तो चाँदी के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरु के उदय होने से सोने के भाव गिर जाते हैं।

भिन्न २ मासों में गुरु के उदय होने से मार्कीट पर प्रभाव

गुरु के कार्तिक मास में उदय होने से वर्षा बहुत कम होती है।

गुरु के मार्गशीर्ष मास में उदय होने से अनाज की पैदावार बहुत होती है।

गुरु के पौष मास में उदय होने से अनाज की पैदावार काफी होती है।

गुरु के माघ और फाल्गुन मास में उदय होने से वर्षा का अभाव रहता है।

गुरु के चैत्र मास में उदय होने से कपास के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरु के ज्येष्ठ मास में उदय होने से वर्षा का अभाव रहता है, और कपास के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरु के आषाढ़ मास में उदय होने से अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

भिन्न २ राशियों में गुरु के उदय होने से मार्कीट पर प्रभाव

गुरु जब मेष राशि में उदय होता है तो अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है, और अकाल पड़ जाता है।

गुरु जब वृष राषि में उदय होता है मणि रत्न आदि के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

गुरु जब कर्क राशि में उदय होता है तो वर्षा बहुत कम होती है, और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरु के सिंह राशि में उदय होने से अनाज के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

गुरु जब तुला राशि में उदय होता है तो केसर, चन्दन आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरु जब मकर राशि में उदय होता है तो वर्षा काफी होती है, और अनाज की पैदावार काफी होती है और अनाज के भाव गिर जाते हैं।

कुम्भ राशि में गुरु के उदय होने से अनाज के भावों में तेज़ी आ जाती है।

गुरु के अस्त होने से मार्केट पर प्रभाव

गुरु जब अस्त होता है तो सोना चान्दी और अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है। रुई और शेयरों के भावों में तेज़ी आ जाती है।

भिन्न २ राशियों में गुरु के अस्त होने का मार्केट पर प्रभाव

गुरु के मेष राशि में अस्त होने पर वर्षा बहुत कम होती है।

वृष राशि में स्थित गुरु जब अस्त होता है तो वर्षा का प्रायः अभाव सा रहता है।

यदि मिथुन राशि में स्थित गुरु अस्त हो तो वर्षा बहुत कम होती है। तेल और मठ के भावों में तेज़ी आ जाती है।

तुला राशि स्थित गुरु के अस्त होने से उड़द और तिल की पैदावार बहुत होती है, और इन वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

मकर राशि स्थित गुरु के अस्त होने से उड़द और तिल की पैदावार बहुत होती है, और इन वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

जब मीन राशि का गुरु अस्त होता है तो प्रायः सर्व प्रकार के अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

शुक्रोदय का मार्केट पर प्रभाव

शुक्र जब उदय होता है तो रुई के भावों में तीन मास के भीतर ही भीतर तेजी आ जाती है।

शुक्र के पूर्व दिशा में उदय होने से रुई, सूत, सोना, चाँदी चावल, और घी के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र के पश्चिम दिशा उदय होने से रुई, सूत, सोना, चाँदी तिल और चावल आदि के भावों में तेजी आ जाती है। घी और खान्ड के भाव गिर जाते हैं।

भिन्न २ नक्षत्रों में शुक्रोदय का मार्कीट पर प्रभाव

शुक्र जब देवता गण के नौ नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में उदय होता है तो गुजरात और कर्नाटक के देशों में कृषि को हानि पहुँचती है।

शुक्र जब मनुष्य गण के नौ नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में उदय होता है तो घी अनाज, सूत, रुई, कपास, और चान्दी के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र जब राक्षसगण के नौ नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में उदय होता है तो श्रीफल और रंगीन कपड़े के भावों में तेजी आ जाती है

नोट:—नक्षत्रों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है,

(१) देवता गण, (२) मनुष्य गण और (३) राक्षस गण।

अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, हस्ता, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण और स्वाती येह नौ नक्षत्र देवता गण कहलाते हैं। उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा भाद्रपदा, पूर्वा भाद्रपदा आर्द्रा, भरिणी और रोहिणी ये नौ नक्षत्र मनुष्य गण कहलाते

हैं। कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिक् चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और मूला ये नौ नक्षत्र राक्षस गण कहलाते हैं।

जब शुक्र अश्विनी नक्षत्र में उदय होता है तो तिल और उड़द के भावों में तेजी आ जाती है।

जब शुक्र भरिणी नक्षत्र में उदय होता है तो तिल, सरसों आदि की पैदावार बहुत थोड़ी होती है। प्रायः सर्व प्रकार के हल्के अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

जब शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में उदय होता है तो सर्व प्रकार के धान्यों की पैदावार अच्छी होती है।

जब शुक्रोदय मृगशिरा नक्षत्र में होता है, तो सर्व प्रकार के अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

जब शुक्रोदय आर्द्रा नक्षत्र में होता है तो वर्षा के अभाव के कारण अनाज की पैदावार कम होती है, और अनाज के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

जब शुक्रोदय पुष्य नक्षत्र में होता है तो अनाज की उपज बहुत ही कम होती है। और अनाज के भावों में अत्याधिक तेजी आ जाती है और दुर्भिक्ष पड़ जाता है।

जब शुक्रोदय आश्लेषा नक्षत्र में होता है तो वर्षा नहीं होती।

मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में शुक्रोदय के होने से संसार में कष्ट बढ़ते हैं।

हस्त नक्षत्र में शुक्रोदय के होने से वर्षा से अधिक हानियाँ होती हैं।

चित्रा नक्षत्र में शुक्रोदय होने से रोग फैलते हैं।

स्वाती नक्षत्र में शुक्रोदय होने से संसार में सुख की वृद्धि होती है।

विशाखा नक्षत्र में शुक्रोदय के होने से हल्के धान्यों के भावों में तेजी आ जाती है।

अनुराधा नक्षत्र में शुक्रोदय होने से वर्षा बहुत कम होती है।

भिन्न २ मासों में शुक्रोदय का मार्कीट पर प्रभाव

यदि शुक्रोदय कार्त्तिक मास में हो तो वर्षा साधारण रहती है।

मार्ग शीर्ष मास में शुक्रोदय होने से नदियों में बाढ़ अधिक आती हैं।

शुक्रोदय यदि माघ अथवा पौष मास में हो तो छत्र भंग होता है।

फाल्गुन अथवा श्रवण मास में शुक्रोदय होने से अनाज के भावों में तेजी आती है।

चैत्र मास में शुक्रोदय होने से सिंहों का भय रहता है।

बैसाख मास में शुक्रोदय होने से सुख बढ़ता है।

ज्येष्ठ मास के शुक्रोदय होने से पशुओं में कष्ट फैलता है।

आषाढ़ मास में शुक्रोदय होने से वर्षा बहुत थोड़ी होती है।

श्रावण मास में शुक्रोदय होने से वर्षा साधारण रहती है।

भाद्रपद मास में शुक्रोदय होने से अनाज के भाव गिर जाते हैं।

आश्वनि मास शुक्रोदय होने से सर्व प्रकार की सम्पतियों में वृद्धि होती है।

भिन्न २ राशियों में शुक्रोदय का मार्कीट पर प्रभाव

जब शुक्रोदय मेष राशि में होता है तो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है। रोगों का प्रकोप अधिक बढ़ जाता है।

वृष राशि में यदि शुक्रोदय हो तो अनाज के भाव गिर जाते हैं।

मिथुन राशि में यदि शुक्रोदय हो तो रूई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि शुक्रोदय कर्क अथवा सिंह राशि में हो तो अनाज नष्ट हो जाता है, और अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

कन्या राशि में शुक्रोदय होने से राजाओं को कष्ट होता है

यदि शुक्रोदय तुला राशि में हो तो अनाज के भाव गिर जाते हैं।

धन राशि में शुक्रोदय होने से वर्षा बहुत थोड़ी होती है।

यदि शुक्रोदय मकर राशि में हो तो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

कुम्भ राशि में शुक्रोदय होने से चौपाये नष्ट हो जाते हैं, वर्षा बहुत थोड़ी होती है।

मीन राशि का शुक्रोदय जन साधारण में सुख की वृद्धि करता है।

शुक्रास्त का मार्कीट पर प्रभाव

शुक्रास्त होने पर रूई और चाँदी के भावों में एक मास में मन्दी आ जाती है।

जब शुक्र पूर्व दिशा में अस्त होता है तो रुई के भाव गिर जाते हैं। अनाज के भावों में एक मास में तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है। सोना, ताम्बा, पीतल, जस्त, हींग पारा केशर, सोना मखी के भावों में तेजी आ जाती है। चांदी के भाव पहले कुछ गिर कर बाद में तेज हो जाते हैं।

जब शुक्र पश्चिम दिशा में अस्त होता है तो रुई, अलसी, बिनौला, मूंगफली, एरण्ड, तेल, घी, सूत और कपड़े के भावों में मन्दी आ जाती है। चांदी और सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है।

जब शुक्र वक्री होकर अस्त होता है तो चाँदी के भाव गिर जाते हैं। रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्रोदय से लेकर शुक्रास्त तक रुई के भावों में तेजी और शुक्रास्त तक से लेकर शुक्रोदय तक रुई के भावों में मन्दी रहती है।

नोट—शुक्र कम से कम ५ दिन और अधिक से अधिक ७२ दिन तक अस्त रहता है। जो शुक्रास्त ७ दिन अथवा ७ दिन से कम होता है उसका मार्कीट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सात दिन से अधिक दिन के शुक्रास्त में रुई के भाव गिर जाते हैं।

भिन्न २ नक्षत्रों में शुकास्त का मार्कीट पर प्रभाव

यदि शुक्रास्त देवता गण के नौ नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में हो तो एक मास में अनाज के भावों में तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है। सोना और चाँदी के भाव तेज हो जाते हैं।

मनुष्य गण के नौ नक्षत्रों में से यदि किसी एक नक्षत्र में शुक्र का अस्त हो तो अनाजों के भाव तेज प्रथम एक मास में तेल के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि शुक्रास्त राक्षस गण के नौ नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में हो तो अकार के लक्षण दृष्टि गोचर होने लगते हैं।

भिन्न २ मासों में शुक्रास्त का मार्कीट पर प्रभाव

कार्तिक मास में शुक्र के अस्त होने से वर्षा बहुत थोड़ी होती है।

मार्ग शीर्ष मास में शुक्र के अस्त होने से राष्ट्रों में परस्पर युद्ध होता है।

पौष मास में शुक्र के अस्त होने से छत्रभंग होता है।

फाल्गुन मास में शुक्र के अस्त होने से आग लगाने की दुर्घटनायें अधिक होती हैं।

चैत्र मास में शक्र के अस्त होने से छः मास दुर्भिक्ष रहता है।

वैशाख मास में शुक्र के अस्त होने से पशुओं को पीड़ा होती है।

आषाढ़ा मास में शुक्र के अस्त होने से गेहूं और जौ नष्ट हो जाते हैं अतः इन के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

भाद्र पद मास में शक्र के अस्त होने से अनाज कुछ सस्ता हो जाता है।

आश्विन मास में शुक्र के अस्त होने से प्रायः सर्व प्रकार के अनाज सस्ते हो जाते हैं।

भिन्न २ राशियों में शुक्रास्त का मार्कीट पर प्रभाव

जब मेषराशि का शक्र अस्त होता है तो सर्व प्रकार के अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

जब वृष राशि का शुक्र अस्त होता है तो अनाज की पैदावार काफी होती है और अनाज सस्ता हो जाता है। श्वेत वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

जब शक्र मिथुन राशि में अस्त होता है तो वर्षा बहुत ही थोड़ी होती है।

जब शक्र कर्क राशि में अस्त होता है तो वर्षा काफी होती

जब शुक्र सिंह राशि में अस्त होता है तो स्वेत वस्तुओं के भाव गिर जाते है।

जब शुक्र कन्या राशि मे अस्त होता है तो वैद्यों को कष्ट होता है।

जब शुक्र तुला राशि में अस्त होता है तो स्वेत वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र के वृश्चिक राशि में अस्त हे ने से दुर्भिक्ष पड़ जाता है।

जब शक्र धन राशि में अस्त होता है तो सर्व प्रकार के अनाजों और स्त्रियों का नाश होताहै।

जब शुक्र मकर राशि में अस्त होता है तो अनाज की पैदावार काफी होती है।

शक्र के कुम्भ राशि में अस्त होने से ब्राह्मणों को पीड़ा होती है।

शुक्र जब मीन राशि में अस्त होता है तो सुख शान्ति की वृद्धि होती है।

शनि के उदय होने से मार्कीट पर प्रभाव

शनि के उदय होने से शेयरों के भाव गिर जाते हैं। रूई आठ दिनों में मन्दी हो जाती है। अनाज के भाव प्रथम कुछ तेज होकर बाद में मन्दे हो जाते हैं। लोहा, जस्त, शीशा, रंग, काली वस्तुयें, घास, लकड़ी और गुड़, खान्ड के भावों में तेजी आ जाती है। एरण्ड सरसों, अलसी, बिनौला मूंगफली आदि वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

भिन्न भिन्न राशियों में शनि के उदय होने से मार्कीट पर प्रभाव

मेष राशि में शनि के उदय होने से वर्षा काफी होती है।

वृष राशि में शनि के उदय होने से घास लकड़ी आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

मिथुन राशि में शनि के उदय होने से प्रायः सर्व प्रकार के अनाज सस्ते हो जाते और अकाल पड़ जाता है।

कर्क राशि में शनि के उदय होने से घी तेल आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

सिंह राशि में शनि के उदय होने से राजा अधर्मी हो जाते हैं।

कन्या राशि में शनि उदय होने से धान्य का नाश हो जाता है, और धान्य के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

तुला राशि में शनि के उदय होने से गेहूँ की पैदावार नहीं होती, और गेहूं के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। वर्षा का अभाव रहता है।

वृश्चिक राशि में शनि के उदय होने से पशु रोगों से पीड़ित होते हैं।

कुम्भ अथवा मीन राशि नें शनि के उदय होने से अनाज

की पैदावार बहुत कम होती है, और अनाज के भावों में अत्याधिक तेज़ी आ जाती है।

शनि के अस्त होने से मार्कीट पर प्रभाव

शनि जब अस्त होता है तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। रुई शेयर और सोने के भाव गिर जाते हैं। एरन्ड के भावों में तेजी आ जाती है। शनि के उदय होने से पूर्व जिन वस्तुओं के भावों में तेज़ी होगी उन वस्तुओं के भाव गिर जायेंगे और जिन वस्तुओं के भाव मन्दे होंगे उन वस्तुओं के भावों में तेजी आ जायेगी।

भिन्न २ राशियों में शनि के अस्त होने से मार्कीट पर प्रभाव

मेष राशि में स्थित शनि के अस्त होने से अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

वृष राशि में स्थित शनि के अस्त होने से गाय और वेश्या की पीड़ा होती है।

कर्क राशि में स्थित शनि के अस्त होने से अनाज मंहगा हो जाता है। वर्षा नहीं होती, रुई और कपास के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

कन्या राशि में स्थित शनि के अस्त होने से सर्व प्रकार की धातुएं और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

तुला राशि में स्थित शनि के अस्त होने से अनाज की पैदावार बहुत ही थोड़ी होती है। अनाज के भाव बढ़ जाते हैं।

मकर राशि में स्थित शनि के अस्त होने से किसी स्थान पर साधारण सी वर्षा होती है।

ग्रह विचार

ग्रहों का मार्कीट पर प्रभाव

सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण का मार्कीट पर प्रभाव

ग्रहण का प्रभाव केवल उसी स्थान पर पड़ता जहाँ पर ग्रहण दिखाई दे। जिन देशों में ग्रहण दिखाई नहीं देगा वहाँ उसका किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

पूरे ग्रहण का प्रभाव तीन सप्ताह में पड़ता है।

पौन ग्रहण का प्रभाव एक मास में पड़ता है।

आधे ग्रहण का प्रभाव दो मास में पड़ता है।

तिहाई ग्रहण का प्रभाव तीन मास में पड़ता है।

चौथाई ग्रहण का प्रभाव चार मास में पड़ता है।

चन्द्र ग्रहण लगने से दो सप्ताह पूर्व रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

सूर्य ग्रहण से १५ दिन पूर्व चान्दी के भावों में मन्दी आ जाती है।

चन्द्र ग्रहण से १५ दिन पूर्व चान्दी के भावों में मन्दी आ जाती है, और यह मन्दी कोई एक मास तक रहती है।

ग्रहण लगने से पूर्व चान्दी और रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है।

भिन्न २ मासों में ग्रहण का मार्कीट पर प्रभाव

कार्तिक शुक्ल पक्ष की पूर्णमासी को चन्द्र ग्रहण लगने से प्रायः सर्व प्रकार के अनाज सस्ते हो जाते हैं। सुभिक्ष होता है।

मार्ग शीर्ष की पूर्ण मासी को चान्द्र ग्रहण लगने से अनाज के भावों में आठ मास के परचात तेजी आ जाती है। व्यापारियों को चाहिये कि अनाज का संग्रह का आठ मास के परचात बेच काफी लाभ होगा।

पौष की पूर्ण मासी को चन्द्र ग्रहण लगने से रुई, सूत, कपास वस्त्र, घी, तेल, गुड़, खान्ड और शक्कर आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

माघ की पूर्ण मासी को चन्द्र ग्रहण लगने से अनाज के भाव में छः मास के परचात काफी तेजी आ जाती है, गुड़, खान्ड, घी तेल, आदि वस्तुओं के संग्रह करने वाले व्यापारियों को काफी लाभ होता है।

फाल्गुन की पूर्ण मासी को चन्द्र ग्रहण लगने से अनाज के भावों में पहले तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है। घी, तेल, गुड़, खान्ड आदि के भाव अत्याधिक तेज हो जाते हैं।

चैत्र की पूर्ण मासी को चन्द्र ग्रहण लगने से अनाज के भावों में पांच मास के भीतर अत्याधिक तेजी आ जाती है। वर्षा का चौमासे में अभाव रहा है।

वैशाख की पूर्ण मासी को चन्द्र ग्रहण लगने से गेहूँ, सूत, कपास, रुई और अलसी के भावों में तेजी आ जाती है। घी, तेल गुड़, खान्ड आदि के भाव गिर जाते हैं। अन्य वस्तुओं के भाव प्रायः वैसे के वैसे रहते हैं।

ज्येष्ठ की पूर्ण मासी को चन्द्र ग्रहण लगने से घी, तेल, गुड़, खान्ड, रस कस, रुई और अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है। यदि यह ग्रहण रविवार के दिन आ जाय तो वर्षा कम होती है, किन्तु यह वर्षा घास के लिये पर्याप्त होती है।

यदि त्रयोदशी की घड़ियां थोड़ी हों, चतुदर्शी का क्षय हो, और पूर्ण मासी को चन्द्र ग्रहण हो तो रुई के भाव काफी गिर

जाते हैं।

श्रावण की पूर्णमासी को चन्द्र ग्रहण लगने से रुई, कपास सूत, और कपड़े के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज की पैदावार काफी होती है और अनाज सस्ता हो जाता है।

भाद्रपद की पूर्ण मास को चन्द्र ग्रहण लगने पर यदि सोना बेच कर अनाज खरीदा जाय तो काफी लाभ होता है। रुई, कपास घी तेल और गुड़ खान्ड आदि के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

आश्विन की पूर्णमासी चन्द्र ग्रहण लगने से रुई और सूत के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

भिन्न २ वारों पर चन्द्र ग्रहण के लगने से मार्कीट पर प्रभाव

रविवार के दिन चन्द्र ग्रहण लगने से रुई, कपास, गेहूँ, अलसी और लाल वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है। चाँदी के भाव गिर जाते हैं। जो व्यापारी अनाज का संग्रह करेंगे उन्हें पाँच मास के पश्चात् काफी लाभ होगा। व्यापारियों को चाहिये कि चन्द्र ग्रहण से १५ दिन पूर्व ही बेच डालें, अन्यथा उन्हें घाटे में रहना पड़ेगा। क्योंकि रविवार के दिन चन्द्र ग्रहण लगने से जैसा कि ऊपर कहा गया चाँदी के भाव गिर जाते हैं। रविवार के दिन पूरा ग्रहण लगने से राष्ट्रों में परस्पर युद्ध होता है।

सोमवार के दिन चन्द्र ग्रहण लगने से घी और तेल के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भावों में तेजी ग्रहण के अनन्तर आती है।

बुध वार के दिन चन्द्र ग्रहण लगने से सोना, चान्दी और ताम्बा आदि के भावों में तेजी आ जाती है, रुई के भाव बढ़ जाते हैं।

बृहस्पतिवार के दिन चन्द्र ग्रहण लगने से घी और तेल के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भाव प्रथम कुछ मन्दे होकर बाद में तेज हो जाते हैं।

शुक्रवार के दिन चन्द्र ग्रहण लगने से रुई के भावों में चार मास मन्दी रहकर बाद में तेजी आ जाती है।

शनिवार के दिन चन्द्र ग्रहण लगने से अलसी, एरन्ड, सरसों, तेल, अफीम, उड़द, काली वस्तुयें, काले कपड़े, लोहा, जवार, बाजरा आदि के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। व्यापारियों को चाहिये कि इन वस्तुओं का संग्रह करें, छः मास के पश्चात काफी लाभ होगा।

भिन्न २ मासों में सूर्य ग्रहण का मार्कीट पर प्रभाव

चैत्र मास की अमावस्या को यदि सूर्य ग्रहण लगे तो अनाज और सोने का संग्रह करना चाहिये, तुरन्त लाभ होता है। गेहूँ के भावों में प्रथम तेजी आकर बाद में मन्दी आ जाती है।

वैशाख मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से प्रायः सर्व प्रकार के अनाजों के भाव गिर जाते हैं। व्यापारियों को चाहिये कि रुई, सूत, कपास, वस्त्र और तेल का संग्रह करें, काफी लाभ होगा।

ज्येष्ठ मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से राष्ट्रों में युद्ध छिड़ जाता है। यदि इसी दिन वार भी मंगल का हो तो अकाल पड़ जाता है, घी, तेल, गुड़, खान्ड और सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है।

श्रावण मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से अनाज और रस कस के भावों में तेजी आ जाती है।

भाद्रपद मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से प्रायः सर्व प्रकार के अनाजों के भाव गिर जाते हैं।

आश्विन मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से घी तेल आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

कार्तिक मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से प्रायः सर्व प्रकार के अनाज सस्ते हो जाते हैं। घी और रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

मार्गशीर्ष मास अमावस्या को रुई और कपास के भाव गिर जाते हैं। अनाज घी, तेल, गुड़ आदि रस कस के भावों में तेजी आ जाती है।

पौष मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

माघ मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से घी और अनाज के भाव तेज हो जाते हैं।

फाल्गुन मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण लगने से घी, तेल, गुड़, खान्ड और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है। जो व्यापारी इन वस्तुओं का संग्रह करेंगे उन्हें काफी लाभ होगा।

भिन्न २ वारों पर सूर्य ग्रहण लगने से मार्कीट पर प्रभाव

रविवार के दिन सूर्य ग्रहण लगने पर गेहूँ, चावल, घी, तेल, गुड़, खांड आदि वस्तुओं का यदि संग्रह किया जाये तो अढ़ाई माह में काफी लाभ होता है।

यदि सूर्य ग्रहण सोमवार के दिन लगे तो घी, तेल, उड़द, अफीम तथा काली वस्तुओं का और सर्व प्रकार के अनाजों का संग्रह करने से लाभ होता है। राष्ट्रों में युद्ध होता है।

यदि सूर्य मंगल वार के दिन लगे तो गेहूं, चावल, घी, गुड़, आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है। प्रायः सर्व प्रकार की वस्तुओं के भाव कोई चार मास तक तेज रहते हैं। यदि रुई, कपास, सूत, कपड़ा और चांदी का संग्रह किया जाय तो लाभ होता है।

यदि सूर्य ग्रहण बुधवार के दिन लगे तो सर्व प्रकार के धान्य और रुई, सूत, कपड़ा, लहो आदि वस्तुओं का क्रय करें काफी लाभ होगा।

यदि सूर्य ग्रहण बृहस्पतिवार के दिन लगे तो अलसी, सरसों, खांड, विनोला, तिल, तेल और पीली वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्र वार के दिन सूर्य ग्रहण लगे तो रुई, सूत, कपास और घास के भावों में तेजी आ जाती है। वर्षा अत्यधिक होती है। प्रायः सब वस्तुओं के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि शनिवार के दिन सूर्य ग्रहण लगे तो सर्व प्रकार की पीली वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

ग्रहण के भिन्न २ नक्षत्रों में लगने से मार्कीट पर प्रभाव

यदि ग्रहण अश्विनी नक्षत्र में लगे तो मूंग, घी आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

भरिणी नक्षत्र में ग्रहण लगने से अनाज के भाव तेज हो जाते हैं।

कृतिका नक्षत्र में ग्रहण लगने से सोना, चांदी, मोती आदि रत्नों के क्रय करने से लाभ होता है।

रोहिणी नक्षत्र में ग्रहण लगने से सर्व प्रकार के अनाज, गुड़, घी, रुई, कपास, सूत और घास का संग्रह करना चाहिये

काफी लाभ होता है। किन्तु चन्द्र ग्रहण पर इन वस्तुओं के संग्रह करने से कोई लाभ नहीं होता।

मृगशिरा नक्षत्र में ग्रहण लगने से गेहूँ, चावल और सोने के भाव तेज हो जाते हैं।

आर्द्रा नक्षत्र में ग्रहण लगने से घी तेल और लोहे के भावों में तेजी आ जाती है।

पुनर्वसु नक्षत्र में ग्रहण के लगने से रुई, कपास, चावल आदि वस्तुओं के भावों मे तेजी आ जाती है।

पुष्य नक्षत्र में ग्रहण के लगने से घी, गुड़, जौ और ताँबे के भावों में तेजी आ जाती है।

आश्लेषा नक्षत्र में ग्रहण लगने से ज्वार, बाजरा, मद्य, हल्दी तांम्बा और मजीठ के भावों में तेजी आ जाती है।

मघा नक्षत्र में ग्रहण लगने से चना आदि वस्तुओं के व्यापार में लाभ होता है।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में ग्रहण लगने से सर्व प्रकार के तेल, चना, चावल, रुई, सूत, कपास और कपड़े के भावों में तेजी आ जाती है।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में ग्रहण लगने से चना और चावलों के भावों में तेजी आ जाती है।

हस्त नक्षत्र में ग्रहण लगने से चना और चावल भाव में तेज हो जाते हैं।

चित्रा नक्षत्र में ग्रहण लगने से ज्वार के भावों में दो मास में तेजी आ जाती है।

स्वाती नक्षत्र में ग्रहण लगने पर यदि अनाज का संग्रह किया जाय तो तीसरे, पांचवे और नवें मास में लाभ होता है।

विशाखा नक्षत्र में ग्रहण लगने से सर्व प्रकार की लाल वस्तुएँ

रुई, उड़द और चना कुल्थी आदि के भावों में तेजी आ जाती है।

अनुराधा नक्षत्र में ग्रहण लगने से चावलों के भाव गिर जाते हैं। जवार और तिलों के भावों में तेजी आ जाती है।

ज्येष्ठा नक्षत्र में ग्रहण लगने से ताम्बा आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

मूल नक्षत्र में ग्रहण लगने से चावल, जवार, बाजरा, बिनौला शक्कर और इलायची के भावों में तेजी आ जाती है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में ग्रहण लगने स्वेत वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

उत्तरा षाढ़ा नक्षत्र में ग्रहण लगने से फल का संग्रह करना चाहिये, पांच मास में लाभ होता है।

श्रवण नक्षत्र में ग्रहण लगने से रुई और धान्य के भाव तेज हो जाते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र में यदि ग्रहण लगे तो उड़द के व्यापार में लाभ होता है।

शतभिषा नक्षत्र में यदि ग्रहण लगे तो संसार में रोग अधिक [illegible]

पूर्वा भाद्र पद नक्षत्र में यदि ग्रहण लगे तो संसार में रोग अधिक फैलते हैं।

उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र में यदि ग्रहण लगे तो नमक का संग्रह करने से तीन मास में लाभ होता है।

रेवती नक्षत्र में यदि ग्रहण लगे तो मघ और उड़द का संग्रह करने से छः मास में लाभ होता है।

ग्रहों के विशेष प्रभाव

सूर्य ग्रहण के दिन व्यतिपात योग होने से रुई के 'भावों में

अत्यधिक तेजी आ जाती है।

यदि सूर्य ग्रहण की अमावास्या के पश्चात् आने वाली पूर्णमासी के चन्द्र ग्रहण हो तो चांदी के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

चैत्र मास में ग्रहण के लगने से सोने के भावों में तेजी आ जाती है।

वैशाख मास ग्रहण के लगने से रुई, सूत, कपास कपड़ा और तिल तेल के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि सूर्य और चन्द्र का एक ही मास में खग्रास ग्रहण हो तो अकाल पड़ जाता है।

अमावस्या और पूर्णमासी द्वारा तेजी मन्दी जानना

किसी भी अमावस्या अथवा पूर्णमासी को यदि वर्षा के ओले गिरें अथवा चपला गिरें, अथवा आंधी आये अथवा भूकम्प आये अथवा आकाश में टिड्डी दल दिखाई दे तो उसे उल्कापात नाम से सम्बोधित किया जाता है, और इस उल्कापात का मार्कीट पर प्रभाव केवल अमावस्या अथवा पूर्णमासी के दिन ही हो सकता है।

मेष संक्रान्ति की अमावस्या अथवा पूर्णमासी के दिन उल्कापात होने पर गेहूँ जौ आदि का क्रय करके चौथे मास में बेचा जाय तो काफी लाभ होता है।

वृष संक्रान्ति की अमावास्या अथवा पूर्णमासी के दिन यदि उल्कापात हो तो कन्द मूल के भाव तेज हो जाते हैं।

मिथुन संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर यदि सर्व प्रकार के रसों को खरीद कर छः मास

पश्चात् बेचा जाय तो काफी लाभ होता है।

कर्क संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर यदि सोना, चांदी, लोहा आदि धातुयें तथा घी गुड़ शक्कर और तेल आदि वस्तुयें खरीद कर दूसरे मास बेची जायें तो काफी लाभ होता है।

सिंह संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर सोना, मोती, लाल, पन्ना, पुखराज, हीरा, चांदी आदि वस्तुयें खरीद कर पाँचवें मास बेचें, काफी लाभ होगा।

कन्या संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर व्यापारी को चाहिये कि बोझ ढोने वाले पशुओं को खरीद कर छः मास के पश्चात बेचे, काफी लाभ होगा।

तुला संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर व्यापारी को चाहिये कि उड़द, मूंग, ज्वार, बाजरा, मक्का, केसर, कस्तूरी, पीला रंग, घी और हल्दी आदि वस्तुओं को खरीद कर छः मास के पश्चात बेच डालें, काफी लाभ होगा।

वृश्चिक संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर व्यापारी को चाहिये कि इसी मास में मिट्टी का तेल, आलू, अर्बी, जस्ता, शीशा पत्थर का कोयला, सोना, चांदी ताम्बा लोहा आदि धातुएँ खरीद कर उसी मास में बेच डाले, काफी लाभ होगा।

धनु संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर व्यापारी को चाहिये कि मोती मूंगा, आदि खनिज पदार्थ और केसर खरीद कर छः मास के पश्चात् बेचें, काफी लाभ होगा।

मकर संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर व्यापारी को चाहिये कि गेहूं, चना, उड़द, जौ, मूंग

और लोहा तथा ताम्बा आदि धातुयें खरीद कर एक मास के पश्चात् बेचें काफी लाभ होगा।

कुम्भ संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर व्यापारी को चाहिये कि गेहूँ, जौ, चना, मक्का, बाजरा, ज्वार, अरहर और लोहे तथा ताम्बे के बर्तन खरीद कर एक मास के पश्चात् बेच दें, काफी लाभ होगा।

मीन संक्रान्ति की पूर्णमासी अथवा अमावस्या के दिन उल्कापात होने पर जो व्यापारी हीरा, पुखराज, नीलम, जमरूद, सोने, चाँदी और मुर्दासन तथा पत्थर का कोयला खरीद कर छः मास पश्चात बेचेगा उसे काफी लाभ होगा।

वर्ष के राजा का मार्कीट पर प्रभाव

जिस दिन चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा आती है, वह दिन उस वर्ष का राजा कहलाता है, और उसका मार्कीट की तेजी मन्दी पर जा प्रभाव पड़ता है उसका वर्णन किया जाता है।

रविवार

यदि चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा रविवार के दिन आ जाय अथवा यों कहिये कि यदि वर्ष का राजा सूर्य हो तो पश्चिमी देशों में कई प्रकार की विपत्तियाँ आती हैं। राष्ट्रों में परस्पर युद्ध होता है। अनाज की फसलें प्रायः नष्ट हो जाती हैं। वर्षा बहुत कम होती है। फलों और सब्जियों के भावों में तेजी आ जाती है। किसी २ स्थान पर ओले गिरते हैं। अनाज की पैदावार नहीं होती और वर्ष के अन्त में अकाल पड़ जाता है। व्यापारियों को चाहिये कि ऐसे वर्ष लगने से अनाज का संग्रह करलें, उन्हें काफी लाभ होगा।

चन्द्र

यदि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा सोमवार को हो अर्थात यदि वर्ष का राजा चन्द्र हो तो प्रायः सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में मन्दी आ जाती है। गेहूँ, चावल, बाजरा और चना के भावों में भारी मन्दी आ जाती है। अनाज की पैदावार अच्छी होती और चावल विशेषकर अधिक उत्पन्न होता है। वर्षा पर्याप्त होती है। यह वर्ष लोगों के लिये अधिक सुख कर होता है।

मंगल

जब चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा मंगलवार के दिन आती है यानी वर्ष का राजा जब मंगल होता है तो इस पृथ्वी के एक भाग में अकाल पड़ जाता है। वर्षा पानी की न होकर ओलों की होती है जिससे फसलें नष्ट हो जाती हैं प्रायः सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। राष्ट्रों में परस्पर वैमनस्य बढ़ जाता है।

बुध

जब चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा बुधवार के दिन आती है यानी वर्ष का राजा बुध हो तो लोगों में रोग अधिक फैलते हैं जिस से वैद्यों हकीमों व डाक्टरों को काफी लाभ होता है। वर्ष के आरम्भ में प्रायः सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है, किन्तु वर्ष के अन्त में सर्व प्रकार के अनाज सस्ते हो जाते हैं। इस वर्ष में व्यापारियों को व्यापार में काफी लाभ होता है।

बृहस्पति

यदि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा बृहस्पतिवार आ जाये अर्थात

यदि वर्ष का राजा बृहस्पति हो तो वर्ष के आरम्भ में सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में मन्दी आकर वर्ष के अन्त में तेजी आ जाती है। जो व्यापारी वर्ष के आरम्भ में अनाज खरीद कर वर्ष के अन्त में बेचेंगे वे काफी लाभ में रहेंगे।

शुक्र

यदि चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा शुक्रवार को आ जाय, दूसरे शब्दों में यदि वर्ष का राजा शुक्र हो तो सर्व प्रकार के अनाज सस्ते हो जाते हैं। फसलें अच्छी होती हैं। भावों में साधारण सी घटा बढ़ी होती है। जो व्यापारी इस वर्ष अनाज का क्रय विक्रय करते रहेंगे उन्हें काफी लाभ होगा, किन्तु जो व्यापारी धान्य का संग्रह करके बैठ जायेंगे उन्हें हानि होगी।

शनि

यदि चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को शनिवार हो, यानि यदि वर्ष का राजा शनि हो तो प्रायः सर्व प्रकार के खाद्य पदार्थों की पैदावार कम होती है। अकाल पड़ जाने का भय सदा बना रहता है। काले रंग की वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है। वर्षा बहुत ही कम होती है। ओलों के गिरने से फसलें नष्ट हो जाती हैं। सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। लोहा, ऊन, और तिल के भाव तेज हो जाते हैं। आकाश में तारों की चाल में गड़बड़ी मच जाती है। रोग अधिक फैल जाते हैं।

वर्ष के मन्त्री का मार्कीट पर प्रभाव

जिस दिन मेष संक्रान्ति लगती है और अंग्रेजी के अप्रैल मास की १२ तारीख होती है उसी दिन को वर्ष का मन्त्री कहते हैं। भिन्न वर्ष के मन्त्रियों का मार्कीट पर जो प्रभाव पड़ता है वह नीचे दिया जाता है।

सूर्य

यदि मेष संक्रान्ति अथवा अप्रैल की १२ तारीख रविवार को आ जाय अर्थात् यदि वर्ष का मन्त्री सूर्य हो तो सर्व प्रकार के अनाज के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। गर्मी अधिक होती है। रोगों का भय बना रहता है। प्रजा में हा-हा-कार मच जाती है। मनुष्यों में एकदूसरे के प्रति शत्रुता के भाव अधिक उत्पन्न हो जाते हैं।

चन्द्र

यदि मेष संक्रान्ति और १३ अप्रैल सोमवार को आ जाय अर्थात यदि वर्ष का मन्त्री चन्द्र हो तो श्वेत रंग की सर्व प्रकार की वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है रुई सूत, कपास और ऊन के भाव गिर जाते हैं। प्रजा में सुख शांति की वृद्धि होती।

मंगल

यदि मेष संक्रान्ति और १३ अप्रैल मगल वार को हो अर्थात यदि वर्ष का मन्त्री मंगल हो तो अकाल पड़ जाने का भय लगा रहता है। फसलें प्रायः नष्ट हो जाती हैं सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। व्यापारियों को व्यापार में काफी लाभ होता है। चेचक का रोग फैलने लगता है। अन्य भी कई प्रकार के रोग फोड़े फुन्सियां आदि फैल जाती हैं। महामारी का रोग उत्पन्न हो जाता है। पश्चिमी देशों में अकाल का अधिक भय रहता है।

बुध

यदि मेष संक्रान्ति और १३ अप्रैल बुधवार हो अर्थात यदि वर्ष का मन्त्री बुध हो तो सर्व प्रकार के अनाजों के भाव गिर जाते हैं।

फसलें अच्छी होती हैं। प्रजा में सुख और शांति की वृद्धि होती है। कर्याना सस्ता हो जाता है।

बृहस्पति

यदि मेष संक्रान्ति और १३ अप्रैल बृहस्पतिवार हो अर्थात यदि गुरु वर्ष का मन्त्री हो तो अनाज की पैदावार अच्छी होती है, और सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में मन्दी आ जाती है। फलों और सब्जियों के भाव गिर जाते हैं। वर्षा अच्छी होती है।

शुक्र

यदि मेष संक्रान्ति और १३ अप्रैल शुक्रवार हो अर्थात यदि शुक्र वर्ष का मन्त्री हो तो वर्षा अच्छी होती है। मेवों के भाव गिर जाते हैं। व्यापारियों को व्यापार में लाभ रहता है।

शनि

यदि मेष संक्रान्ति और १३ अप्रैल शनिवार हो अर्थात शनि वर्ष का मन्त्री हो तो व्यापारियों को हानि होती है। वर्षा कम होती है अकाल का भय बना रहता है। चोरियाँ अधिक होती हैं।

द्वितीया के चन्द्रोदय का मार्कीट पर प्रभाव

द्वितीया का चन्द्रोदय के समय यदि उत्तर दिशा की ओर का शृंग ऊँचा हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है और यदि दक्षिण का शृंग ऊँचा हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं। यदि शृंग किसी ओर ऊंचा न हो अर्थात सम हो रुई के भाव साधारण रहते हैं।

यदि चन्द्र का रंग उदय होते समय लाली पर हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है। यदि उदय काल में चन्द्र का रंग

फीका हो तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

भिन्न २ वारों में द्वितीया के चन्द्रोदय होने से मार्कीट पर प्रभाव

यदि द्वितीया का चन्द्र रविवार के दिन उदय हो तो रुई के भाव प्रथम कुछ गिर कर बाद में तेज हो जाते हैं। अनाज के भाव गिर जाते हैं। घी, खाण्ड, गुड़, तिल तेल, अलसी और सरसों के भावों में दो सप्ताहों में अधिक तेजी आ जाती है।

यह द्वितीया का चन्द्र सोमवार के दिन उदय हो तो सोना और चांदी के भावों में तेजी आ जाती है। मूंग, मोठ, चना आदि अनाज के भाव तेज हो जाते हैं। रुई के भावों में दो सप्ताहों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

यदि द्वितीया का चन्द्र मंगलवार के दिन उदय हो तो चांदी के भावों में काफी घटा बढ़ी हो कर बाद में मन्दी आ जाती है। रुई, सूत, कपास, अलसी, श्वेत वस्तुओं, गेहूँ आदि सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि द्वितीया का चन्द्र बुधवार के दिन उदय हो तो रुई और चांदी के भावों में पहले कुछ घटा बढ़ी होकर बाद में मन्दी आ जाती है। अलसी के भाव तेज हो जाते हैं। गुड़, शक्कर, खाण्ड और श्वेत वस्तुओं के भावों में एक मास के भीतर मन्दी आ जाती है।

यदि द्वितीया का चन्द्र गुरुवार के दिन उदय हो तो रुई के भाव प्रथम कुछ गिर कर बाद में तेज हो जाते हैं, गुड़ और खाण्ड के भाव गिर जाते हैं। रुई, कपास, सूत, रेशमी तथा ऊनी कपड़े घी और तेल के भावों में दो सप्ताहों में तेजी आ जाती है। चांदी के भावों में काफी घटा बढ़ी रहती है।

यदि द्वितीया का चन्द्र शुक्रवार के दिन उदय हो तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होकर बाद में तेजी आ जाती है, और यह तेजी केवल शुक्ल पक्ष तक ही रहती है, और कृष्ण पक्ष को रुई के भाव गिर जाते हैं। चांदी के भावों में घटा बढ़ी हो कर बाद में तेजी आ जाती है। चावल, चना, उड़द, और तेल के भाव तेज हो जाते हैं। ऊन के भाव गिर जाते हैं। सोने के भाव में साधारण सी तेजी आ जाती है।

यदि द्वितीया का चन्द्र शनिवार के दिन उदय हो तो सोना, चांदी, घी और तेल के भावों में मन्दी आ जाती है। रुई और अलसी के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय रवि मंगल शनि में से किसी एक वार में हो और उसी मास में आने वाली पूर्णमासी भी उसी वार को हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि द्वितीया के चन्द्र के दिन शेयरों के भावों में तेजी हो तो यह तेजी पूर्णमासी तक रहेगी।

भिन्न २ राशियों में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से मार्कीट पर प्रभाव

मेष राशि में द्वितीय के चन्द्र के उदय होने से गेहूं, जौ, चन अनाज अलसी और रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

वृष राशि में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से रुई, सूत कपास, और सर्व प्रकार के अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

मिथुन राशि में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से रुई, सूत कपास और सर्व प्रकार के अनाज के भावों में तेजी आ जाती है

कर्क राशि में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से वर्षा क

होती है ।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय सिंह राशि में हो तो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय कन्या राशि में हो तो पशुओं का नाश होता है । राष्ट्रों में परस्पर विरोध हो जाता है ।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय तुला राशि में हो तो व्यापार की वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती ।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय वृश्चिक राशि में हो तो अनाज की पैदावार काफी होती है ।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय धन राशि में हो तो प्रजा में सुख शांति की वृद्धि होती है ।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय मकर राशि में हो तो शुभकारी होता है ।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय कुम्भ राशि में हो तो चना, उड़द, और तिल के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि द्वितीया के चन्द्र का उदय मीन राशि में हो तो रुई के भावों में प्रथम मन्दी आ कर बाद में थोड़ी सी तेजी आ जाती है ।

यदि मकर अथवा कुम्भ राशि में द्वितीया का चन्द्र उदय हो कर मेघों में अस्त हो जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है ।

भिन्न २ नक्षत्रों में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने का प्रभाव

अश्विनी नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है ।

भरणी नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से दक्षिणी

राज्यों में उपद्रव होते हैं।

कृतिका नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से गेहूँ, चावल, चना, तेल और गुड़ के भावों में तेजी आ जाती है।

रोहिणी नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से रोगों का अधिक प्रकोप होता है।

मृगशिरा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से पूर्वी राष्ट्रों में परस्पर युद्ध होता है। धान्य के भाव साधारण रहते हैं।

आर्द्रा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से रुई और रस कस के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज के भाव गिर जाते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से कहीं २ आग लग जाने का भय बना रहता है। प्रजा सुखी होती है।

पुष्य नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से ताप आदि रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है।

आश्लेषा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से पशुओं को पीड़ा होती है। अनाज के भाव गिर जाते हैं। रस कस के भाव साधारण रहते हैं।

मघा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से घी, तेल, गुड़, कपास, और रुई के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज के भाव गिर जाते हैं।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से घी, तेल, गुड़ कपास और रुई के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज सस्ता हो जाता है।

हस्त नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से रुई के भाव

तेज हो जाते हैं। जो व्यापारी अनाज का संग्रह करेंगे वे तीन मास के पश्चात् काफी लाभ उठायेंगे।

चित्रा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से अनाज के भाव गिर जाते हैं। पशुओं को पीड़ा होती है। रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

स्वाती नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से रुई, सूत, कपास के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज के भाव गिर जाते हैं।

विशाखा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से अनाज के भाव गिर जाते हैं। गेहूँ, अलसी और गुड़ आदि वस्तुओं के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

अनुराधा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के निकलने से सर्व प्रकार के अनाज सस्ते हो जाते हैं।

ज्येष्ठा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के निकलने से अनाज के भाव गिर जाते हैं।

मूल नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से घी, तेल और गुड़ के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज के भाव गिर जाते हैं।

पूर्वाषाढा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से अनाज रुई, सूत कपास और कपड़े के भाव गिर जाते हैं।

श्रवण नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

शतभिषा नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से घी और गुड़ के भावों में तेजी आ जाती है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से सर्व प्रकार की श्वेत वस्तुएं और घी तेल आदि के भावों में तेजी

आ जाती है। अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से लोग अधिक दुःखी होते हैं।

रेवती नक्षत्र में द्वितीया के चन्द्र के उदय होने से अनाज के भावों में तेजी आ जाती है और यह तेजी कोई ढाई मास तक रहती है और ढाई मास के पश्चात पुनः अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

पूर्णमासी के चन्द्र का मार्कीट की तेजी मन्दी पर प्रभाव

यदि पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा उदय होते समय लाल दिखाई दे तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा उदय होते समय कालिमा पर हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा के उदय होते समय प्रतिपदा लग जाये और सूर्य तथा चन्द्र एक दूसरे के आमने सामने हों तो रुई के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

यदि पूर्णमासी पूरी हो और चन्द्रमा उदय होते समय लाली हो तो रुई के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

यदि पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा बादलों में उदय हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा उदय होते समय छोटा दिखाई दे तो प्रायः सर्व प्रकार की वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा उदय होते समय छोटा दिखाई दे तो प्रायः सर्व प्रकार की वस्तुएं सस्ती हो जाती हैं।

प्रत्येक मास की तिथि वार से व्यापारिक वस्तुओं के भावों की घटा बढ़ी देखनी

यदि एक पक्ष में तीन बुधवार आ जायें तो घी के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की एकमी को रवि, मंगल, बुध अथवा शनिवार हो तो रुई के भाव तेज हो जायेंगे। भावों में तेजी की न्यूनाधिकता एकम की घड़ियों के प्रमाण से होती है। एकमी की घड़ियां जितनी अधिक होंगी रुई के भाव उतने अधिक तेज होंगे, और जितना कम होंगी भावों में उतनी ही कम तेजी आयेगी।

यदि प्रतिपदा सोमवार हो और चन्द्ररात्रि भी उसी दिन हो और पूर्णमासी तथा अमावस्या यह भी दोनों सोमवार हों तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि प्रतिपदा मंगलवार हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा सोम मंगल और शनिवार हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बुधवार के दिन शुक्ल पक्ष की एकम हो तो तीन सप्ताहों में चाँदी क भावों में मन्दी आ जाती है। घी के भाव तेज हो जाते हैं। अनाज के भावों में तीन मास में तेजी आ जाती है।

बुधवार के दिन यदि शुक्ल पक्ष की एकम हो अथवा अष्टमी अथवा पूर्णमासी हो तो रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है। घी, तेल, गुड़, खाण्ड और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि गुरुवार के दिन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा हो तो चांदी के भाव दो सप्ताहों में गिर जाते हैं। रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्रवार के दिन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा हो और उसी दिन द्वितीया के चन्द्र भी दिखाई दे तो रुई के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। यदि द्वितीया के चन्द्र के दर्शन न हों तो तेजी साधारण रहती है।

यदि शुक्रवार के दिन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा हो और पूर्णमासी भी फिर इसी दो दिन आये, और एकम के साथ ही शुक्रवार के दिन चन्द्र दर्शन भी हों तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि शनिवार के दिन शुक्लपक्ष की प्रतिपदा हो और शुक्ल पक्ष की दशमी को रविवार हो तो रुई और सर्व प्रकार के अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शनिवार के दिन शुक्ल पक्ष की एकम हो और फिर इसी मास की पूर्णमासी भी इसी वार को आ जाय तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है और यदि उसी दिन रोहिणी नक्षत्र भी साथ में हो तो रुई के भावों में और भी अधिक मन्दी आ जाती है।

यदि शनिवार के दिन शुक्ल पक्ष की एकम के साथ चित्रा नक्षत्र भी साथ में हो तो रुई में थोड़ी सी मन्दी आ जाती है।

यदि शनिवार के दिन शुक्ल पक्ष की एकम हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं। अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की एकम को चन्द्रमा वृश्चिक राशि का हो और वृश्चिक संक्रान्ति भी उसी ही मास में हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि पूर्णमासी की घड़ियां शुक्ल पक्ष की एकम के नक्षत्र की घड़ियों से अधिक हों तो उसी पक्ष में रुई के भावों में तेजी आ जायेगी। यदि पूर्णमासी की घड़ियां थोड़ी होंगी तो रुई के भाव

गिर जायेंगे।

शनिवारी शुक्ल पक्ष की एकम, शुक्रवारी शुक्ल पक्ष की द्वितीय, गुरुवारी तृतीय, बुधवारी चतुर्थी, मंगलवारी पंचमी, सोमवारी षष्ठि और रविवार सप्तमी इसी क्रम से ही तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि रविवार अथवा सोमवार के दिन शुक्ल पक्ष की द्वितीय आ जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि सोमवार को शुक्ल पक्ष की द्वितीय अर्थात चन्द्र दर्शन तो दो सप्ताहों में रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की बुधवार को द्वितो, रविवार को षष्ठि और बृहस्पतिवार को दशमी हो तो रुई और घी के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि मंगलवार के दिन शुक्ल पक्ष की द्वितीया, हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बुधवार के दिन शुक्ल पक्ष की द्वितीया हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है। व्यापारियों को चाहिये कि रुई आठ दिन के पश्चात बेच देवें।

यदि शुक्रवार के दिन शुक्ल पक्ष की द्वितीया हो और पूर्णमासी भी इसी मास की इसी दिन आय तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि शुक्रवार के दिन शुक्ल पक्ष की द्वितीया हो और रविवार के दिन शुक्ल पक्ष की दशमी हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बृहस्पतिवार के दिन तिथि का क्षय हो और शुक्ल पक्ष की एकम तथा दशमी दोनों शुक्रवार आयें तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शनिवार के दिन द्वितीया हो और चन्द्र दिखाई दे तो

रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि मंगलवार के दिन शुक्ल पक्ष की पंचमी हो तो चाँदी के भावों में आठ दिनों में तेजी आ जाती है।

सोम, मंगल और शनिवार में से किसी भी वार को यदि शुक्ल पक्ष की चतुर्थी आ जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि रविवार के दिन शुक्ल पक्ष की षष्ठि आ जाय तो सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है। रुई सूत कपास चावल और घी के भाव तेज हो जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की षष्ठि की घड़ियाँ थोड़ी होने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

सोमवार अथवा मंगलवार के दिन यदि शुक्ल पक्ष की षष्ठि आ जाय तो गुड़, गेहूँ, अलसी आदि वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की षष्ठि बुध अथवा शनिवार के दिन हो तो अनाज के भावों में एक मास में तेजी आ जाती है।

बृहस्पति अथवा शुक्रवार के दिन यदि शुक्ल पक्ष की षष्ठी आ जाय तो सब वस्तुओं के भावों में एक मास में तेजी आ जाती है।

यदि बृहस्पतिवार के दिन शुक्ल पक्ष की षष्ठि हो और रवि वार के दिन शुक्ल पक्ष की दशमी हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है। यदि दोनों तिथियां ४५ घड़ियों से अधिक की हो तो रुई के भावों में तेजी एकदम आ जाती है। यदि दशमी की घड़ियां षष्ठी की घड़ियों से अधिक हो तो रसकस और घी के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शनिवार के दिन शुक्ल पक्ष की षष्ठि हो तो गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की षष्ठी अथवा दशमी रविवार को हो तो

रुई के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन चाँदी के भावों में तेजी होगी तो यह तेजी पूर्णमासी तक रहेगी।

यदि शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन चान्दी के भावों में मन्दी होगी तो यह मन्दी पूर्णमासी तक रहेगी।

यदि रविवार के दिन शुक्ल पक्ष की षष्ठी और बृहस्पतिवार के दिन दशमी हो तो बृहस्पतिवार से रविवार तक रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि सोमवार के दिन शुक्ल पक्ष की सप्तमी हो और शनिवार के दिन त्रयोदशी तो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है। यदि चौमासे में हो तो वर्षा कम होती है ।

यदि बृहस्पतिवार के दिन शुक्ल पक्ष की सप्तमी हो तो शुक्ल पक्ष की एकम से दशमी तक रुई के भावों में तेजी रहती है।

यदि बुधवार के दिन शुक्ल पक्ष की अष्टमी हो [illegible] ज में १५ दिनों में घटा बढ़ी होती है।

यदि रविवार के दिन शुक्ल पक्ष की दशमी हो तो शुक्ल पक्ष में रुई और घी के भाव तेज रहते हैं।

यदि शनिवार के दिन शुक्ल पक्ष की दशमी हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की दशमी शुक्रवार के दिन हो और गुरुवार को तिथि का क्षय हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बृहस्पतिवार के दिन शुक्ल पक्ष की दशमी हो और साथ ही उस दिन धनिष्ठा नक्षत्र हो और दूसरे दिन तक रहे तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि मंगलवार के दिन शुक्ल पक्ष की दशमी हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की एकादशी शुक्रवार के दिन आ जाय तो रुई के भाव गिर जाते हैं ।

किसी भी मास में एकादशी सोमवार के दिन आ जाय और साथ ही यदि वैधृति अथवा व्यतिपात का उस दिन योग हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि शुक्रवार के दिन शुक्ल पक्ष अथवा कृष्ण पक्ष की द्वादसी आ जाय तो रुई के भाव गिर जाते हैं ।

यदि द्वादशी की वृद्धि हो जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि पूर्णमासी की घड़ियाँ चतुर्दशी की घड़ियों से अधिक हो तो रुई और घी के भावों में मन्दी आ जाती है ।

यदि पूर्णमासी की घड़ियां चतुर्दशी की घड़ियों से कम हों तो रुई और घी के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि पूर्णमासी ५—१० घड़ियों की हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि पूर्णमासी तीस घड़ियों से ऊपर की हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं ।

यदि रविवार के दिन पूर्णमासी हो तो अलसी के भाव गिर जाते हैं । अनाज और सरसों के भावों में तेजी आ जाती है । रुई के भावों में १० दिनों में घटा बढ़ी होती है ।

यदि सोमवार के दिन पूर्णमासी हो और साथ ही उस पक्ष की किसी तिथि का क्षय हो और शनि वक्री हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है ।

यदि सोमवार के दिन पूर्णमासी और वैधृति अथवा व्यतिपात का भी उस दिन योग हो तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है ।

यदि मंगलवार के दिन पूर्णमासी हो तो प्रायः सर्व प्रकार की

वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं। किन्तु रुई के भावों में तेजी आ आ जाती है।

यदि बुधवार के दिन पूर्णमासी हो तो चाँदी और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बृहस्पति वार के दिन पूर्णमासी हो तो घी, तिल और तेल के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि शुक्रवार के दिन पूर्णमासी हो तो चान्दी और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है। शेयरों के भाव बढ़ जाते हैं। रुई मन्दी हो जाती है।

यदि शनिवार के दिन पूर्णमासी हो तो शेयरों और सर्व प्रकार की वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भावों में पहले कुछ घटा बढ़ी होकर बाद में मन्दी आ जाती है।

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण और घनिष्ठा यदि इन चार नक्षत्रों में से कोई भी एक नक्षत्र पूर्णमासी के दिन हो तो घी तेल और गुड़ खाण्ड के भावों में तेजो आ जाती है।

जो नक्षत्र पूर्णमासी के दिन हो तो उस नक्षत्र की घड़ियों से यदि पूर्णमासी की घड़ियाँ कम हो तो अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है। और यदि घड़ियाँ अधिक हो तो अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

पूर्णमासी के दिन वर्षा होने से घी गेहूँ और अनाज के भावों ३ मास में तेजी आ जाती है।

पूर्णमासी की घड़ियां यदि अमावस्या की ८ घड़ियों से अधिक हों तो रुई और घी के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि पूर्णमाशी की घड़ियाँ अमावस्या की घड़ियों से कम हों तो घी तेल और गुड़ खाण्ड के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि पूर्णमासी के नक्षत्र की घड़ियों से अमावस्या के नक्षत्र

की घड़ियाँ कम हो तो घी तेल और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि पूर्णमासी और अमावस्था दोनों सोमवार को हों, और दोनों के बीच के दिनों में शनि वक्री हो और साथ ही एकम तिथि का क्षय हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बुधवार को कृष्ण पक्ष की एकम हो तो चान्दी के भावों में या तो घटा बढ़ी होती है या भाव मन्दे होते हैं।

यदि रविवार को कृष्ण पक्ष की द्वितीया हो तो के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि बुधवार के दिन कृष्ण पक्ष की द्वितीया हो, षष्ठी रविवार हो तथा दशमी गुरुवार की हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि कृष्ण पक्ष की षष्ठी २—५ घड़ियों की हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि रविवार के दिन कृष्ण पक्ष की षष्ठी हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है। अनाज और घी के भाव दो सप्ताहों में तेज हो जाते हैं।

यदि कृष्ण पक्ष की षष्ठी रविवार और दशमी ब्रहस्पतिवार को हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं, और घी के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि वृहस्पति वार के दिन कृष्ण पक्ष की षष्ठी हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि कृष्ण पक्ष की नवमी, दशमी और एकादशी के दिन रुई के भावों में तेजी आयेगी तो कृष्ण पक्ष की द्वादशी और त्रयोदशी में मन्दी आ जायेगी।

यदि रविवार के दिन कृष्ण पक्ष की दशमी हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं। घी और गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि मंगलवार के दिन कृष्ण पक्ष की दशमी हो तो गुड़ के

भावों में तेजी आ जाती है।

यदि रविवार के दिन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी हो तो अनाज के भावों तेजी आ जाती है।

यदि चतुर्दशी और अमावस्या के दिन रुई के भावों में तेजी हो तो उसके १५ दिन पीछे रुई के भावों में मन्दी हो।

यदि कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी और अमावस्या के दिन रुई के भावों में मन्दी हो तो उसके १५ दिन पीछे रुई के भावों में तेजी हो।

यदि अमावस्या की घड़ियाँ चतुर्दशी की घड़ियों से अधिक हो तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है, और यदि कम हो तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि अमावस्या की घड़ियाँ थोड़ी हो तो आने वाले पक्ष में रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि अमावस्या ३० घड़ियों से कम की हो और उसके ऊपर एकम हो तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि एक अमावस्या रविवार हो और उसके पश्चात् दूसरी अमावस्या भी रविवार आ जाय तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

यदि अमावस्या सोमवार के दिन हो और उससे पूर्व रविवार तिथि का क्षय हो तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि अमावस्था रविवार के दिन आ जाय तो घी के भावों में तेजी आती है, और रुई चान्दी तथा अन्य सब प्रकार की वस्तुओं के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि सोमवार के दिन अमावस्या थोड़ी घड़ी की हो तो रुई भाव गिर जाते हैं।

सोमवार के दिन अमावस्या के आने से चांदी, रुई, कपास सूत, वस्त्र तथा श्वेत वस्तुओं के भाव गिर जाते हैं।

मंगलवार के दिन यदि अमावस्या आ जाय तो रुई और

कपास के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि सोमवार के दिन अमावस्या हो और साथ ही कर्क का चन्द्रमा हो तो रुई के भाव में तेजी आ जाती है।

यदि अमावस्या सोम, बुध, गुरु अथवा शुक्रवार हो तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि अमावस्या मंगलवार को हो तो रुई, चांदी और अलसी के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है। सर्व प्रकार के अनाजों के भाव में तेजी आ जाती है।

यदि बुधवार के दिन अमावस्या आ जाय तो अनाज के भाव गिर जाते हैं।

यदि गुरुवार के दिन अमावस्या आ जाय तो रुई के भाव १० दिनों के भीतर गिर जाते हैं।

यदि शुक्रवार के दिन अमावस्या आ जाय तो चांदी के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भावों में काफी घटा बढ़ी होती है।

यदि शनिवार के दिन अमावस्या आ जाय तो चान्दी और अनाज के भाव में तेजी आ जाती है। रुई के भावों में तेजी आ जाती है। रुई के भावों में घटा बढ़ी हो कर बाद में तेजी आ जाती है।

यदि अमावस्या शनिवार को हो और साथ ही मूल नक्षत्र हो तो अनाज के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि अमावस्या शनि, रवि अथवा मंगलवार को हो तो अनाज का संग्रह करने से लाभ होता है।

तिथियों की क्षय वृद्धि का मार्केट पर प्रभाव

यदि कोई शुक्ल पक्ष १३ दिनों का आये तो चांदी के भाव गिर जाते हैं।

शुक्ल और कृष्ण पक्ष में से किसी भी एक पक्ष के १३ दिन के होने से संसार में भयंकर युद्ध होता है। रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है और सर्व प्रकार के अनाजों के भावों में तेजी आ जाती है।

मास में दो तिथियों की वृद्धि हो जाने से घी तेल के भाव गिर जाते हैं।

मास में दो तिथियों के क्षय हो जाने से घी तेल के भावों मे तेजी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष में तिथि की वृद्धि होती हो और कृष्ण पक्ष में क्षय होता हो तो रुई के भाव शुक्ल पक्ष में तेज होकर कृष्ण पक्ष में गिर जाते हैं।

यदि शुक्ल पक्ष तिथि का क्षय और कृष्ण पक्ष में वृद्धि होती हो तो रुई के भाव शुक्ल पक्ष में गिर कर कृष्ण पक्ष में तेज हो जाते हैं।

शुक्ल पक्ष में तिथि की वृद्धि होने से रुई में मन्दी आ जाती है, और चांदी के भाव तीन दिन में गिर जाते हैं।

शुक्ल पक्ष में तिथि के क्षय होने से रुई के भाव तेज हो जाते हैं, और चांदी के भावों में तीन दिनों में तेजी आ जाती है।

रविवार के दिन यदि किसी एक तिथि का क्षय हो जाय तो रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि सोमवार के दिन किसी तिथि की वृद्धि हो जाय तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष एकम की वृद्धि होने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष की एकम, पंचमी और चतुर्दशी के बढ़ने से अनाज के भाव गिर जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की एकम, पंचमी और चतुर्दशी के क्षय होने से अकाल पड़ जाता है। अनाज के भाव तेज हो जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की तृतीया के पक्ष होने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की तृतीया के बढ़ जाने से रुई के भावों में दस दिनों में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष की षष्ठी के क्षय होने से रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि का क्षय हो और मंगल अपनी राशि बदले तो रुई के भाव गिर जाते हैं। यदि इसी समय शनि और गुरु वक्री हो जायें तो रुई के भाव और भी अधिक मन्दे हो जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की नौमी के क्षय होने से घी के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष की दशमी के क्षय होने से घी के भावों में तेजी आ जाती है। यदि इसी तिथि का क्षय पौष अथवा भाद्रपद मास में हो तो घी के भाव अत्यधिक तेज हो जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की दशमी से पूर्णमासी तक की किसी एक भी तिथि के क्षय होने से उस मास में रुई के भाव गिर जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की दशमी से पूर्णमासी तक किसी एक भी तिथि के वढ़ जाने से उस मास में रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष की एकादशी के बढ़ जाने से घी के भाव गिर जाते हैं। रूई के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष की एकादशी द्वादशी और त्रयोदशी में से किसी भी एक तिथि के क्षय हो जाने से घी के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के क्षय हो जाने से रूई और चावलों के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी का क्षय हो और साथ ही चन्द्र ग्रहण हो तो रूई के भाव गिर जाते हैं।

यदि शुक्ल पक्ष चतुर्दशी का क्षय हो और पूर्णमासी को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई में टका ५० की मन्दी होती है।

यदि शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी का क्षय हो और उस से पूर्व त्रयोदशी कम घड़ियों की हो और उसके पश्चात् पूर्णमासी को चन्द्र ग्रहण ग्रस्तास्त हो तो रूई के भाव गिर जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी अथवा पूर्णमासी का क्षय होने से रूई के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी अथवा पूर्णमासी के बढ़ जाने से रूई के भाव गिर जाते हैं।

पूर्णमासी के क्षय होने से रूई के भाव गिर जाते हैं। गेहूँ, चावल, और घी, तेल के भावों में तेजी आ जाती है।

पूर्णमासी के बढ़ जाने से गेहूँ, चावल, चांदी, घी और अनाज के भावों में एक मास में मन्दी आ जाती है।

किसी पक्ष की एकम तिथि की यदि वृद्धि हो और साथ ही उस दिन वैधृती अथवा व्यतिपात योग हो तो रूई के भाव गिर जाते हैं।

किसी पक्ष की दशमी अथवा त्रयोदशी तिथि के क्षय होने से घी के भावों तेजी आ जाती है।

१४ दिनों का कृष्ण पक्ष आने से चांदी के भाव तेज हो जाते हैं।

कृष्ण पक्ष में किसी तिथि के बाद जाने से चाँदी के भाव गिर जाते हैं। रुई में ३ दिनों में मन्दी आ जाती है। घी और अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

कृष्ण पक्ष में जिस दिन कोई तिथि घटे उस दिन रुई के भाव घट जाते हैं किन्तु तीन दिनों में रुई फिर तेज हो जाती है। अनाज और घी के भाव गिर जाते हैं। चांदी के भाव में तेजी आ जाती है।

कृष्ण पक्ष की षष्ठी के क्षय होने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

कृष्ण पक्ष की षष्ठी का क्षय दो घड़ी भीतर होने से रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

कृष्ण पक्ष की षष्ठी के बढ़ जाने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

कृष्ण पक्ष की दशमी के क्षय होने से रुई और घी के भावों में तेजी आ जाती है।

कृष्ण पक्ष की एकादशी द्वादशी और त्रयोदशी में से किसी भी एक तिथि के क्षय हो जाने से रुई के भाव उस मास में तेज हो जाते हैं।

कृष्ण पक्ष की दशमी से लेकर अमावस्या तक किसी भी एक तिथि के क्षय हो जाने से उस मास में रुई के भावों में तेजी रहती है।

कृष्ण पक्ष की दशमी से अमावस्या तक किसी भी एक तिथि के बढ़ जाने से उस मास में रुई के भावों में मन्दी रहती

है।

अमावस्या के क्षय होने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि अमावस्या की तिथि में से वृद्धि हो जाये और उस मास में रुई के भाव गिर जायें तो आने वाले मास में रुई के भावों में तेजी आ जायेगी।

कृष्ण पक्ष की किसी भी एक तिथि के क्षय हो जाने से उस से तीन दिन पूर्व और तीन दिन पश्चात रुई के भाव मन्दे रहते हैं।

योगों द्वारा तेजी मन्दी निरीक्षण

रविवार के दिन वैधृति योग अथवा व्यति पात योग होने से रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

यदि वैधृति अथवा व्यतिपात का योग रविवार के अतिरिक्त किसी अन्य वार को हो, और साथ ही उस दिन यदि रोहिणी नक्षत्र हो और वृष का चन्द्रमा हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

किसी भी दिन व्यतिपात, वैधृति अथवा ऐन्द्र के योग होने से शेयरों के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि किसी व्यतिपात अथवा वैधृति का योग हो, और साथ ही उसी दिन किसी तिथि की वृद्धि हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

शुक्ल पक्ष में सोम, मंगल अथवा शनिवार के दिन तिथि का क्षय हो जाने से घी के भावों में तेजी आ जाती है। यदि कृष्ण पक्ष में तिथि का क्षय है तो घी के भावों में न्यूनाधिक तेजी आती है।

दो योगों के एक ही मास में क्षय होने से घी के भावों में तेजी आ जाती है।

किसी भी दिन अमृत सिद्धि योग होने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

पंचक का मार्केट पर प्रभाव

पंचक धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्द्ध से प्रारम्भ होती है। पंचकों में आधा धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद और रेवती नक्षत्र है।

यदि पंचक के प्रथम अढ़ाई दिनों में रुई के भावों में तेजी आ जाय तो पिछले अढ़ाई दिनों में रुई के भावों में मन्दी आ जाती है

यदि पंचक के प्रथक अढ़ाई दिनों में मन्दी आ जाय तो पिछले अढ़ाई दिनों में मन्दी तेजी आ जाती है।

पचक के रवि, सोम, बुध और शनिवार में से किसी एक वार को लगने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

पंचक के लगने पर यदि कुम्भ का चन्द्रमा पन्चास घड़ी पीछे आये और मेष के चन्द्र का उदय रात्री को हो तो शेयरों के भावों में एक मास तक तेजी आ जाती है।

पंचक के ४५ घड़ी पीछे लगने से योनि कुम्भ के चन्द्रमा के सूर्योदय के बाद आने से, और उसी प्रकार पंचक के ४५ घड़ी पीछे उतरने से यानि मेष के चन्द्र के ४५ घड़ी पीछे उतरने से रुई और शेयरों के भावों में एक मास तक तेजी आ जाती है।

उपरोक्त समय के अतिरिक्त किसी अन्य समय में पंचक के आरम्भ होने तथा उतरने से रुई और शेयरों के भाव गिर जाते हैं।

पंचकों के शुक्रवार के दिन से आरम्भ होने से रुई और शेयरों के भाव प्रथम तेज होकर बाद में गिर जाते हैं।

पंचकों के प्रारम्भ दिन में मृत्यु योग होने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

पंचक में मंगलवार के दिन तेजी होने पर शनिवार के दिन भी तेजी आती है।

यदि पंचक में शनिवार के दिन भाव तेज हों तो मंगलवार के दिन भी भाव तेज होंगे।

पंचक के आरम्भ से अन्त तक यदि रुई के भाव तेज होंगे तो वह मन्दी एक मास तक रहेगी।

पंचक के पश्चात् दूसरे मास के भीतर की पंचक तक जो भी शुक्रवार आयेगा उस दिन पंचक में आई हुई तेजी मन्दी के अनुसार तेजी मन्दी आयेगी।

पृथक २ वस्तुओं के तेजी मन्दी के योगों का वर्णन

रुई के तेजी के योग

गुरु शुक्री की युति मार्गी होने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है, और यह तेजी युति काल तक ही रहती है।

जब गुरु के साथ शुक्र वक्री होकर युति करता है तो युति के पश्चात् रुई के भावों में तेजी आ जाती हैं।

मीन राशि स्थित जब गुरु वक्री हो जाता है तो रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल वार के दिन सूर्य ग्रहण लगने से रुई के भावों में दो मास पश्चात तेजी आ जाती है।

गुरु जब शनि राशि में आता है तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

गुरु जब चित्रा नक्षत्र पर आता है तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

पूर्णमासी के ५ घड़ी के भीतर होने से रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि सिंह राशि पर शनि ७/८ अंश का हो तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

शनि और मंगल के एक साथ हो जाने से रुई के भाव में तेजी आ जाती है।

शुक्ल पक्ष की षष्ठी के क्षय हो जाने से रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

राहु के वृष राशि में आ जाने से रुई के भावों में एक वर्ष तक तेजी रहती है।

कन्या राशि में मंगल और राहु के आने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

कन्या राशि में शनि राहु अथवा शनि मंगल के आ जाने से रुई के भाव तिगुने हो जाते हैं।

ग्रहों के वक्री हो जाने से रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

शनि के अस्त होने से चार दिनों तक रुई के भाव तेज रहते हैं।

मेष अथवा वृश्चिक राशि में राहु, शुक्र और मंगल के एकत्र हो जाने से रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

तुला राशि स्थित मंगल के वक्री हो जाने से रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

रेवती नक्षत्र यदि रविवार को हो तो रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि बुध और शुक्र एक स्थान हों तो उनके पृथक होने पर रुई के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल और शनि के मकर राशि में एक साथ आने से रुई के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि मंगल और शनि एक ही राशि में हों और शनि वक्री हो तो बिनौला के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि मंगल और शनि एक राशि में हों, और साथ ही दोनों वक्री हों तो रुई, बिनोला और खली के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

रुई के मन्दी के योग

वैशाख शुक्ल पक्ष की षष्ठी शुक्रवार के दिन आये तो रुई मन्दी हो जाती है।

सूर्य और बुध की युति होने के पश्चात् रुई के भाव गिर जाते हैं।

बुध और शुक्र की युति होने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

गुरु और शुक्र जब मार्गी होकर युति करते हैं तो युति के पश्चात् रुई के भाव गिर जाते हैं।

बुध जब पश्चिम में अस्त होता है तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

मीन राशि स्थित गुरु के मार्गी हो जाने पर रुई के भाव गिर जाते हैं।

कर्क राशि स्थित गुरु के वक्री हो जाने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

गुरु जब कुम्भ राशि में आता है तो छः मास के पश्चात् रुई के भाव गिर जाते हैं।

गुरु जब मिथुन राशि के ऊपर आता है तो रुई के भाव अत्यधिक गिर जाते हैं।

गुरु जब कन्या राशि पर आता है तो रुई के भाव ४ मास में गिर जाते हैं।

शुक्र के कर्क राशि पर २४ अंश पर आने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

जब गुरु कुम्भ राशि पर आता है और उस समय यदि शनि अस्त हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

शनि के तुला राशि पर १५ अंश पर आने के पश्चात् रुई के भाव गिर जाते हैं।

शनि के आश्लेषा नक्षत्र के ऊपर आने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

कृष्ण पक्ष की षष्ठी के होने पर यदि पंचमी दो घड़ी भीतर हो तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

पूर्णमासी के क्षय होने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

सूर्य, और राहु के एकत्र हो जाने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

बुध, गुरु और शुक्र जब कन्या राशि में एकत्र हो जाते हैं तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

सूर्य और शुक्र जब मेष राशि में एकत्र होते हैं तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

चन्द्र और बुध जब कुम्भ राशि में एकत्र हो जाते हैं तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

मंगल और राहु अथवा मंगल और केतु जब एकत्र हो जाते हैं तो रुई के भाव गिर जाते हैं।

एक चन्द्र मास में दो व्यतिपात योगों के आने से रुई के भाव गिर जाते हैं।

गेहूँ की तेजी के योग

जब गुरु कर्क का हो, शनि मीन का हो और मंगल तुला का हो तो गेहूं के भावों में तेजी आ जाती है।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष में बुध के उदय होने से और श्रावण में शुक्र के अस्त होने से गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है।

मेष राशि पर शुक्र और राहु के आने से गेहूँ के भाव तेज हो जाते हैं।

शुक्र, मंगल, सूर्य और शनि के मेष राशि पर आने से गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है।

सूर्य, मंगल और शनि के वृष राशि पर आने से गेहूँ के भाव तेज हो जाते है।

राहु और शनि के धनु अथवा मीन राशि पर आने से अकाल पड़ जाता है।

कार्तिक मास में यदि शुक्ल पक्ष की पंचमी रविवार हो, और उस वर्ष का राजा भी क्रूर हो तो गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है, और अकाल पड़ जाता है।

मंगल, गुरु, शुक्र और शनि जब एकत्र हो जाते हैं तो अकाल पड़ जाता है।

मंगल, शुक्र, शनि और राहु जब एक हो जाते हैं तो वर्षा नहीं होती।

सूर्य, बुध, गुरु, शनि और राहु जब एकत्र हो जाते हैं तो अकाल पड़ जाता है।

राहु और केतु को छोड़कर शेष सातों ग्रहों के एकत्र हो जाने से गोल योग होता है। ऐसे योग से अकाल पड़ जाता है।

जब शनि अनुराधा नक्षत्र के ऊपर और गुरु ज्येष्ठ नक्षत्र के ऊपर आ जाए तो गेहूँ के भाव तेज हो जाते हैं।

वृष राशि में राहु और मंगल के नक्षत्र हो जाने से गेहूं के भावों में छः मास में तेजी आ जाती है।

यदि फाल्गुन मास में मंगल चित्रा पर हो, गुरु शतभिषा पर हो तो गेहूं के भावों में तेजी आ जाती है।

आर्द्रा नक्षत्र के ऊपर जब शनि और राहु का योग होता है

तो वर्षा का अभाव रहता है।

शुक्र और मंगल के रोहिणी नक्षत्र में एकत्र होते समय यदि चन्द्रमा भी उनके साथ मिले तो गेहूँ के भावों में प्रथम तेजी आकर पीछे मन्दी आ जाती है।

श्रावण मास में बुध के उदय होने से और शुक्र के अस्त होने से अकाल पड़ जाता है।

यदि सोर फाल्गुन अथवा चैत्र में मंगल और राहु इकट्ठे हो जायें और ऐसे समय में शुक्र मेष पर हो तो गेहूँ के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

चन्द्र ग्रहण के पन्द्रह दिन पश्चात यदि सूर्य ग्रहण आ जाये तो गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है, और यदि चन्द्र ग्रहण खग्रास तो गेहूँ के भाव और भी अधिक तेज हो जाते हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में सूर्यसिद्धान्तीय गणित से अरुणोदय के समय यदि अनुसंक्रान्ति लगे और शनिवार का उदय हो तो गेहूँ के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

यदि संक्रान्ति प्रवेश मध्यान्ह अथवा अरुणोदय काल में हो और शनि अथवा मंगल अथवा रवि का वार हो, और यदि चतुर्थी, अष्टमी अथवा चतुर्दशी की तिथि हो और भद्रा भी साथ में हो तो गेहूँ के भावों में निश्चय ही तेजी आ जाती है।

यदि शनि मेष राशि में हो, गुरु मीन राशि में हो और मंगल कुम्भ राशि में हो तो सर्व प्रकार की वस्तुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल राहु और शनि, इन तीनों ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह यदि श्रवण नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो गेहूँ और असली के भावों में तेजी आ जाती है। यदि दो तीन ग्रह इसी नक्षत्र के ऊपर एकत्र हो जायें तो तेजी अत्यधिक आ जाती है।

गुरु और शनि के एक साथ वक्री हो जाने से गेहूँ के भावों

में तेजी आ जाती है।

सूर्य, मंगल और राहु यदि यह ग्रह गुरु से तीसरे में हों तो अकाल पड़ जाता है।

यदि, सूर्य मंगल और राहु तीसरे हो तो सुभिक्ष होता है।

सूर्य, मंगल और राहु के गुरु के पाँचवे होने पर अकाल पड़ जाता है।

सूर्य, मंगल और राहु के गुरु से दूसरे, पाँचवें, सातवें, नवें और बारहवें होने से संसार का नाश हो जाता है।

यदि राहु, मंगल और सूर्य शनि से पाँचवें हों तो अकाल पड़ जाता है।

शनि, मंगल और राहु के धनु अथवा मीन में आ जाने से पृथ्वी के दो तिहाई भाग में अकाल पड़ जाता है।

यदि मंगल सिह राशि में स्थित वक्री हो, और गुरु धनु राशि के अतिरिक्त किसी अन्य राशि में हो तो गुड़, खाण्ड और गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि संक्रान्ति और अमावस्या एक ही वार को आ जायें, बुध वक्री हो अथवा अस्त हो चन्द्र, मंगल, शुक्र और राहु विशेषकर यह चारों ग्रह कन्या राशि में हों, और मंगल चित्रा नक्षत्र के ऊपर हो तो गेहूँ के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है।

जिस नक्षत्र में पहली संक्रान्ति का प्रवेश। और उसके बाद आने वाली दूसरी संक्रान्ति का प्रवेश उस नक्षत्र में जो गणना क्रम से प्रथम संक्रान्ति के नक्षत्र से चौथा हो अथवा पाँचवा अथवा छटा हो तो गेहूँ के भावों में तेजी आ जाती है।

गेहूँ की मन्दी के योग

गुरु के वक्री और शनि के अस्त होने से गेहूं के भाव गिर जाते हैं।

यदि मंगल मेष राशि में स्थित हो, और बाद यदि शुक्र भी मेष राशि में आ जाय तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि सौर श्रावण में मंगल मघा नक्षत्र के ऊपर हो और चन्द्रमा तुला अथवा कन्या राशि का हो तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि बुध वृश्चिक राशि में स्थित हो और पीछे शुक्र भी इसी राशि में आ जाय तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

गुरु के कन्या अथवा मीन राशि में अस्त होने से गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि मंगलवार और गुरु मिथुन राशि में स्थित हों शनि तुला तथा राहु धन में स्थित हों वर्षा काफी होती है और गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र एक साथ आ जायें तो गेहूं के भाव गिर जाते हैं।

यदि फाल्गुन शुक्ल पक्ष में गुरु कुम्भ राशि में स्थित हो कर अस्त हो और उस समय चन्द्रमा मीन राशि में आ जाय तो अन्न का संकट दूर हो जाता है। और गेहूं के भाव गिर जाते हैं।

यदि वर्षा ऋतु कन्या राशि स्थित बुध वक्री होता हुआ शीघ्रगामी न हो तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि बुध, शुक्र और मंगल आश्लेषा नक्षत्र के ऊपर आ जाय तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि बुध स्वाती नक्षत्र के ऊपर हो और शनि मूल नक्षत्र के ऊपर हों तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि बुध श्रवण नक्षत्र के ऊपर हो और शुक्र भी श्रवण नक्षत्र के ऊपर हो तथा गुरु पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के ऊपर हो तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि शुक्र श्रवण नक्षत्र के ऊपर हो और गुरु धनिष्ठा

नक्षत्र के ऊपर हो तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

बुध मंगल के कर्क राशि में ऊपर जाने से गेहूँ के भाव गिर जाते हैं। वर्षा काफी होती है।

यदि गुरु श्रवण नक्षत्र के ऊपर हों और शनि तथा मंगल मीन राशि में स्थित हों तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि शुक्र और मंगल तुला राशि में स्थित हों तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि बुध के आगे सूर्य और बुध के पीछे शुक्र हो तो अनाज के भाव गिर जाते हैं।

गुरु और बुध दोनों के वक्री हो जाने से अनाज सस्ता हो जाता है।

सूर्य, चन्द्रमा, बुध गुरु और शुक्र के एकत्र हो जाने से अनाज सस्ता हो जाता है।

जो वर्ष का राजा हो, यदि संक्रान्ति भी उसी वार को आ जाये तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि शुक्ल पक्ष की अष्टमी बढ़ जाये और साथ ही बुधवार हो तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

यदि मंगल उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के ऊपर हो और शनि भाद्री नक्षत्र के तीसरे पाद में हो तो दस दिनों के भीतर ही गेहूँ और चावलों के भाव में मन्दी आ जाती है।

चन्द्र मंगल और गुरु के योग होने से पूर्व यदि गेहूं के भाव तेज होंगे तो योग होने से पाँच दिन पश्चात् गेहूँ के भाव गिर जायेंगे।

कर्क संक्रान्ति के प्रवेश काल में यदि चन्द्रमा कुम्भ अथवा मीन राशि में होगा तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

बुध के भाद्रपद अथवा आश्विन में उदय होने से गेहूँ

के भाव गिर जाते हैं।

यदि कुम्भ संक्रान्ति बुधवार के दिन हो और कार्तिक शुक्ल पक्ष में वृश्चिक संक्रान्ति बृहस्पतिवार के दिन हो तो गेहूँ और चावल के भाव गिर जाते हैं।

यदि मंगल और शुक्र तुला राशि में स्थित हो तो गेहूँ के भाव गिर जाते हैं।

गुरु के धन राशि में आने पर गेहूँ और गुड़ घी, खाण्ड और शक्कर के भाव गिर जाते हैं। यदि इसी वर्ष तुला की संक्रान्ति शुक्रवार को आ जाय तो गुड और खाण्ड के भाव आधे गिर जाते हैं।

सोने के तेजी के योग

मंगल के वक्री हो जाने पर सोने के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

यदि मंगल वृष राशि में आ जाय तो सोने के भाव तेज हो जाते हैं।

मंगल के सिंह राशि में आने पर सोने के भावों में काफी तेजी आ जाती है।

यदि मंगल कन्या राशि में आ जाय तो सोना मंहगा हो जाता है।

मंगल के मकर राशि में आने पर सोने के भावों में तेजी आ जाती है।

बुध के सिंह राशि में आ जाने पर सोने के भावों में तेजी आ जाती है।

गुरु के सिंह राशि में आ जाने पर सोने के भावों में तेजी आ जाती है।

शुक्र के सिंह राशि में आ जाने पर सोने के भावों में तेजी आ जाती है।

सूर्य के तुला राशि में आ जाने पर सोने के भावों में तेजी आ जाती है।

मंगल और राहु के एक ही राशि में आ जाने पर सोने के भावों में तेजी आ जाती है।

यदि वक्री हो जाय तो सोने के भाव अत्यधिक तेज़ हो जाते हैं।

राहु के कर्क राशि में आ जाने पर सोना तथा अन्य सर्व प्रकार की धातुओं के भावों में तेजी आ जाती है।

सोने के मन्दी के योग

सूर्य जब अनुराधा नक्षत्र के ऊपर आ जाता है तो सोने के भाव गिर जाते हैं।

बुध जब पुष्य नक्षत्र के ऊपर आ जाता है तो सोने के भाव गिर जाते हैं।

गुरु जब उदय होता है तो सोने के भाव गिर जाते हैं।

बुध जब मिथुन राशि में आ जाता है तो सोने के भावों में काफी मन्दी आ जाती है।

शनि के मिथुन राशि में आ जाने पर सोना सस्ता हो जाता है।

चांदी के तेजी के योग

जब शुक्र वक्री हो जाता है तो चांदी के भावों में तेजी आ जाती है।

जब गुरु वक्री हो जाता है तो चांदी के भाव तेज हो जाते हैं।

मंगल मेष राशि में आ जाने पर चाँदी के भाव तेज हो जाते हैं।

मंगल के तुला राशि में आ जाने पर चांदी के भावों में तेजी आती है।

बुध के सिंह राशि में आ जाने पर चाँदी के भावों में तेजी आ जाती है।

सूर्य जब धनिष्टा नक्षत्र के ऊपर आ जाता है, तो चन्दी के भावों में तेजी आ जाती है।

सूर्य के पुष्य नक्षत्र के ऊपर आ जाने से चांदी के भाव तेज हो जाते हैं।

जब मंगल और शुक्र एक राशि पर आ जाते हैं तो चांदी के भावों में तेजी आ जाती है।

राहु और मंगल के एक राशि में आ जाने से चांदी के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि राहु और मंगल एक ही नक्षत्र के ऊपर आ जायें तो चांदी के भाव तेज हो जाते हैं।

यदि चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की एकम बुधवार को आ जाय तो चांदी के भाव तेज हो जाते हैं।

राहु कर्क राशि में आकर चांदी के भावों को अत्यधिक तेज कर देता है।

चांदी के मन्दी के योग

शुक्र यदि सिंह राशि में आ जाय तो चांदी के भाव गिर जाते हैं।

शुक्र यदि तुला राशि में आ जाय तो चांदी के भाव गिर जाते हैं।

बुध यदि मेष राशि में आ जाय तो चांदी के भाव गिर जाते हैं।

बुध यदि कन्या राशि में जाय तो चाँदी भाव गिर जाते हैं।

मंगल यदि अश्लेषा नक्षत्र के चोथे मास में आ जाये तो चाँदी के भाव गिर हैं।

सोमवती अमावस्या के आ जाने से चांदी सस्ती हो जाती है।

राहु के मिथुन राशि में आ जाने से चांदी के भावों में विशेष मन्दी आ जाती है।

काली मिर्च

राहु जब सिंह राशि में आ जाय तो उसके छः मास पश्चात् काली मिर्च के भाव दुगने तिगने हो जाते हैं।

एक अन्य योग

यदि गुरु अश्लेषा नक्षत्र के ऊपर हो और उसके साथ राहु भी आ जाय और कोई तीसरा ग्रह साथ न हो तो रूई और सूत में अत्यधिक मन्दी आकर बाद में अत्यधिक तेजी आ जाती है। सोना चांदी भी अत्यधिक मन्दा हो कर बाद में अत्यधिक तेज हो जाते हैं। इस योग में भावों में इतनी उथल पुथल मचती है कि निर्धन धनवान और धनवान निर्धन हो जाते हैं।

वस्तु ध्रुवांक सारिणी—१

नाम वस्तु	ध्रुवांक	नाम वस्तु	ध्रुवांक	नाम वस्तु	ध्रुवांक	नाम वस्तु	ध्रुवांक
स्वर्ण	६१	हरड़	७३	घी	५०	रूई	७७

चांदी	८१	जीरा	७०	तेल	१०	मजीठ	१४४
पीतल	५९	खाण्ड	१०२	उड़द	८०	नारीयल	७८
लोहा	५४	गुड़	४०	तिल	५३	छुहारा	१४४
शीशा	६०	मिसरी	१०३	नम	५६	हल्दी	१०७
कांसी	१२७	कुलथी	६२	सुपारी	२०४	कालीमिर्च	१०७
मोती	६५	कंगणी	२०	तूअर	७२	अरब	७०
ताम्बा	१०	चावल	६७	मूंग	५१	हाथी	६४
रोला	२५	लालमिर्च	१८	चना	५६	भैंस	६२
कपूर	१०२	हींग	६२	जुवार	१००	गाय	७७
सूत	६४	जव	५७	कपास	१२७	बैल	८७

सरसों	८८	शालि	१६५	अफीस	१६२	बकरी	६०
वस्त्र	१००	गेहूँ	१४	सौंठ	१००	ऊरठ	८५

संक्राति ध्रुवांक सारिणी नं० २ तिथि ध्रुवांक सारिणी ३

संक्रान्ति	ध्रुवांक			तिथि	ध्रु०	तिथि	ध्रु०
मीन	१८०	वार ध्रु०सा०४		एकम	१८	त्रयोदशी	११
कुम्भ	१६०	वार	ध्रुवांक	द्वितीया	२०	चतुर्दशी	६
मकर	१६४	सूर्य	४०	तृतीया	२२	पूर्णमासी	१६
धनु	१५४	सोम	५०	चतुर्थी	२४	अमावस्या	७
वृश्चिक	१४४	मंगल	५७	पंचमी	२६		
तुला	१४०	बुध	७२	षष्ठी	२५		

कन्या	१०२	गुरू	६५	सप्तमी	२३		
सिंह	१२५	शुक्र	२४	अष्टमी	२१		
कर्क	१०९	शनी	१४	नौमी	१९		
मिथुन	६६			दशमी	१७		
वृष	८४			एकादशी	१५		
मेष	३७			द्वादशी	१३		

नक्षत्र ध्रुवांक सारिणी नं०—५

नक्षत्र	ध्रुवांक	नक्षत्र	ध्रुवांक	नक्षत्र	ध्रुवांक	नक्षत्र	ध्रुवांक	नक्षत्र	ध्रु०
अश्विनी	१०	पुनर्वसु	२१	हस्त	३३४	पू०षा०	१४२	उ०भा०	१२६
भरिणी	१०	पुष्य	६४	चित्रा	२१	उ०षा०	४२०	रेवती	२५६

कृतिका	५६	अश्लेषा	१३५	स्वाति	२१०	श्रवण	५५०	
रोहिणी	५६	मघा	१५०	विशाखा	२२०	धनि०	७३६	
मृगशिरा	२०	पू० फा०	२२०	अनुराधा	४६२	शतभि०	५७६	
आर्द्रा	८६	उ० फा०	७७	ज्येष्ठा	५५१	पू०सा०	२७५	

योग ध्रुवाँक सारिणी नं०—६

विष्कुम्भ	१३	गण्ड	२५	परिघ	१३
प्रीति	१७	वृद्धि	१७	शिव	१६
आयुष्मान	४८	ध्रुव	२२	सिद्ध	२५
सौभाग्य	६	व्याघात	१५	साध्य	४८

शोभन	३६	हर्षण	१३	शुभ	८८
अतिगण्ड	४७	वज्र	१६	शुक्ल	१२
६ र्मा	१३	सिद्धि	२३	ब्रह्म	१२
धृति	४४	व्यतिपात	३६	ऐन्द्र	२७
शूल	१३	वरीयान	१५	वैधृति	२३

तेजी मन्दी देखने की सरल विधि

जिस वस्तु की आपने तेजी मन्दी देखनी हो उस वस्तु के ध्रुवांक सारिणी से ध्रुवांक लेकर एक सफेद कागज पर लिख दें, उसके पश्चात उस दिन की जो संक्रान्ति हो उस संक्रान्ति के ध्रुवांक लेकर वस्तु के ध्रुवाँक में जोड़े, इसी प्रकार तिथि, वार, नक्षत्र और योग के ध्रुवाँकों को लेकर वस्तु और सक्रांन्ति के ध्रुवांकों के जोड़ में जोड़ दें। हल जितने अंक आयें उसको तीन से भाग दें, यदि एक बचे तो वस्तु के भावों में मन्दी आयेगी, दो शेष बचने से भाव समान रहेंगे और शून्य बचने से उस वस्तु के भावों तेजी आ जायेगी।

उदाहरणार्थ आपके पास एक व्यक्ति सोमवार के दिन यह पूछने आता है कि चान्दी के भाव गिरेंगे अथवा तेज होंगे। उस समय आपको चाहिए कि पंचाग में देखें कि तिथि कौन सी,

नक्षत्र कौन सा है और योग कौन सा है। वस्तु और वार का नाम आपको पहिले ही पता है, और तिथि, नक्षत्र और योग देखने के लिये आपने पचांग देखा तो आपको पता लगा कि तिथि अष्टमी है नक्षत्र स्वाती है, संक्रांति मेष की है, और व्यतिपात का है। अब आप नीचे लिखे अनुसार सब के ध्रुवांक लेकर, लिख कर जोड़ दें जैसे कि नीचे दिखाया गया है।

चान्दी के ध्रुवांक ,, ८१
मेष संक्रांति के ध्रुवाक ,, ३७
अष्टमी के ध्रुवांक ,, २१
सोमवार के ध्रुवांक ,, ५०
स्वाती नक्षत्र के ध्रुवांक २१०
व्यतिपात योग के ध्रुवांक ,, ३८

कुल अंक ४३८
।४६

३/४३८
४२
———
१८
१८
———
×

अब ४३८ को ३ पर देने से शेष नीचे कुछ नहीं बचा, अतः चांदी के भावों में न तेजी आयेगी और न मन्दी अर्थात भाव समान रहेंगे।

सट्टा या

सट्टा जो रुई के नाम से प्रसिद्ध है उसे मारवाड़ी भाषा में 'फाटका' कहते हैं। सब से विख्यात सट्टा रुई का है। यह सट्टा आज कल कलकत्ता, बम्बई, हरिद्वार, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, जैयपुर, अजमेर तथा अन्य बड़े शहरों में अधिक खेला जाता है। इस सट्टे में प्रतिमास हजारों और लाखों रुपये का हेर फेर हो जाता है। वह लोग जो सट्टे का कारोबार करते हैं। इसकी वदौलत लखपति बन गये हैं। सट्टा खेलने वाले इस धन्धे में अधिकांश तबाह और बर्बाद हो गये हैं। और पैसे के लोभ में दिवालिया हो होकर जान खो बैठे हैं।

देखा गया है कि सट्टेबाज अक्सर साधुओं, फकीरों, पीरों और पागलों के पास सट्टे के नम्बर पूछने के लिये जाया करते हैं। और यह सट्टा बताने वाले साधू, फकीर, पीर मजे से हल्वा पूरी, भंग, गान्जा, अफीम, सुलफा और चरस आदि उड़ाते हैं। सट्टे के नम्बर जानने के इच्छुक लोग उनकी मिन्नत समाजत करते हैं और उन्हें खुश करने का प्रयत्न करते रहते हैं।

मेरे अनुभव में आया है कि साधू, फकीर, पीर आदि प्रायः अललटप्प ही नम्बर बताया करते हैं। उनके बताये हुए नम्बर ठीक निकलते हैं या गलत—यह बात नम्बर पूछने वाले ही जानते होंगे। यह सारी बात नम्बर खुलने पर ही मालूम हुआ करती है। और उस वक्त ऐसे आदमी सदा हाथ मलते ही देखे गये हैं। उस समय उन्हें पता लगता है कि वह गल्ती कर गये हैं। मगर इससे नम्बर बताने वाले साधुओं, फकीरों और पीरों की शान में कोई फर्क नहीं पड़ता है। उनके मुरीद अपनी ही भूल समझ कर उन का वही पहला सा आदर करने में लगे रहते हैं।

मैं सट्टे के पक्ष में नहीं हूँ इस लिये किसी को इस बुरी आदत में मैं फसांना नहीं चाहता हूँ। मैं सट्टा, क्लब का जुआ और घुड़-दौड़ आदि २ सब ही जुओं का विरोध करता हूँ। क्योंकि यह सब चीजें आदमी को दुःख ही देने वाली हैं। मैं तो यही कहूँगा कि जो लोग सट्टा आदि खेलना चाहते ही हैं वह साधुओं, फकीरों या पीरों के चक्कर में न पड़ें, बल्कि ज्योतिष-विद्या के अनुसार फल निकाल कर नम्बर का पता करने की कोशिश करें। सम्भव है कि इस रीति से उन्हें सफलता मिल जाये।

आगामी पृष्ठों में मैंने अपनी निर्बल बुद्धि के अनुसार ज्योतिष विद्या की क्रिया द्वारा नम्बर निकालने की विधि समझाने की कोशिश की है आशा है कि सट्टा प्रेमी उस से लाभ उठायेंगे। लेकिन फिर भी मैं यही कहूँगा कि अगर आपको सट्टे का रोग हो गया है तो उस के निवारण का कुछ उपाय करें। क्योंकि मैंने देखा है कि जिस तरह एक रन्डीबाज अपनी सारी पूँजी खोने के बाद या तो अपनी रन्डी का भड़वा बन जाता है या दल्लाली करने लगता है। उसी तरह सट्टे का रसिया बर्बाद होने के बाद या तो सट्टे की दुकान खोल कर बैठ जाता है या फकीर और और पागल बन कर सट्टे के नम्बर बताता फिरने लगता है।

यह तो आपने देखा ही होगा कि सट्टे शौदाई फकीरों और पागलों के पास जा कितनी परेशानियां उठाते हैं। यदि यह फ़कीर या पागल उन्हें गाली भी दे देते हैं तो वह उस गाली से ही सट्टे का नम्बर निकालने की कोशिश करते हैं।

अगले पृष्टों में मैंने कुछ ऐसी विधियाँ बताने का प्रयत्न किया है जिन से सट्टे का ठीक नम्बर मालूम करने में सुविधा हो जाती है। और आदमी इस किस्म की परेशानियों से बच सकता है।

इन विधियों के जानने के लिये सट्टेबाज हजारों रुपये खर्च कर देते हैं मगर फिर भी परिणाम कुछ नहीं निकलता है।

सुनने में आया है कि सट्टे के घत्तियों को प्रायः स्वप्न में भी सट्टे के नम्बर मालूम हो जाया करते हैं। मगर यह स्वप्न में आये हुए नम्बर कभी ठीक निकल आते हैं तो कभी गलत।

मैं रमल और जफर विद्या द्वारा सट्टे के मालूम करने के कुछ उपाय आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है कि आप इस ज्ञान से यथा योग्य लाभ उठायेंगे।

अमेरिका का ध्रुव अंक

सोमवार	मंगलवार	बुद्धवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार	वीरवार
२५२	२४५	२२७	३२७	६५१	१४६	१४६
३	२	१४	५	२२	१२	१२

विधि :—मान लीजिये आप को बीरवार का नम्बर निकालना है। तो आप वीरवार के ध्रुव अंक १४६ लिखिये।

नीचे जो १२ का अँक लिखा हुआ है उस के पास अंग्रेजी तिथि लिखिये जैसे यदि अंग्रेजी मास की तारीख ६ है तो १२ के पास ६ लिखने से १२६ अंक हो गये।

अब १४६ में से १२६ घटा दीजिये—शेष रहे १७—अन्त में १७ को ९ से गुणा कर दो। १७×९=१५३—इसका मतलब हुआ कि सटटे का नम्बर १, ५ या ३ में से ही कोई सा होगा। अनुभव में आया है कि अन्तिम अंक ३ ही इस दशा में सटटे का नम्बर होता है।

नम्बर निकालने की एक एकान्त वासी फकीर की विधि—

यह विधि एक एकान्त वासी फकीर की बताई हुई है। पाठकों के लाभ हित हम उसे नीचे लिख रहे हैं—विधि इस प्रकार है।

पिछली वार जो टर्हा खुला हो उसको ५ से गुणा कर लो उसके बाद यदि वह मास ३१ दिन का है तो ३१ और ३० दिन का है तो ३० उसमें जोड़ दो जो फल आये उसके इधर और उधर के नम्बर ढर्हे के नम्बर होंगे।

जैसे यदि पिछले ढर्हे का नम्बर ९३ था तो ९३×५=४६५ हुये इसमें महीने के ३१ दिन (यदि महीना ३१ दिन का हो) जोड़े जोड़ हुआ ४६५+३१=४९६ असली नम्बर ६ रहा।

नोट :—फरवरी मास में २८ दिन होते हैं मगर जो फरवरी लीप के साल में यानी ऐसे साल में जो ४ पर पूरा विभक्त हो जाता है फरवरी २९ दिन का होता है। महार नम्बर निकालने के लिये फरवरी के सदा ३० दिन लिये जाते हैं।

अमेरिका का चक्कर

नक्षत्र और सूर्य जिस राशि पर हो उन दोनों को जोड़ लें। फिर पिछले मास से गुणा करें और अन्त में बीते हुए दिनों में भाग कर लें—जो शेष रहे वही सट्टे का नम्बर है।

उदाहरण :—जैसे नक्षत्र १८ है और सूर्य की राशी ३—दोनों को जोड़ो १८+३=२१ महीना चौथा है—उसे गुणा किया २१×४=८४ बस ४ ही फीचर है अब इसे बीते हुए १ दिन से भाग दिया तो उत्तर में ४ ही आया—बस यही फीचर ठीक निकला।

अमेरिकन नम्बर निकालना

पंञ्चाग में से जिस तिथि का अंक निकालना हो उस दिन की अंग्रेजी, विक्रमी तथा हिजरी तारीखों में जोड़ लें—और उस जोड़ को ९ पर भाग कर लें—जो शेष रहे वही अमेरिकन अंक होगा।

उदाहरण :—

अंग्रेजी तरीख—५
विक्रमी·········२०
हिजरी·········१६

जोड़·············४१—९=शेष ५

बस ५ ही अमेरिकन अंक होगी और यही अंक उस दिन का फीचर होगा मगर एक अगले और पिछले अंक ४३५, ६ के अंकों को भी ध्यान में रखना चाहिये।

अंकों की पंचलड़ी

जब ऐसे ५ निकालने हों जिन में से एक अंक धड़े का अंक जरूर हो तो उसे पचलड़ी कहते हैं। सट्टे के विशेषज्ञों ने अनेकों पंचलड़ियाँ बनाई हैं जो अधिकतय ठीक ही बैठती हैं। पंचलड़ी बनाने की विधि यह है कि पिछले ढहे का अंक और उसकी धाई और उनको परस्पर गुणा कर लें—फिर गुणनफल को ४ से फिर गुणा कर लें और इस गुणनफल के आगे पिछे के दो अंक ले लें। यह एक विशेष पंचलड़ी है और प्रायः ठीक ही बैठती है।

उदाहरण :—

यदि पिछला ढहाँ ५९ था तो इसके अंकों ५ और ९ को

परस्पर पर गुणा करने से ५×६=४५ आया अब ४५ को ४ से फिर गुणा किया तो ४५×४=१८० आया।

फीचर अंक ० रहा

अब इनके आगे और पीछे के दो दो अंक लिये तो १, २, ०, ६, ८, आया यह पंचलड़ी हुई। इन अंकों में से एक अंक अवश्य आवेगा—

चन्द्र से ४ अंक निकालने की विधि-

जिस दिन जिस राशि का चन्द्रमा हो—अर्थात ३५ घड़ियों पर हो, वह गिनना चाहिये जिस के सामने ४ अंक लिखे हैं उनमें से एक अंक आना चाहिये। चन्द्रमा की राशि और घड़ी पंञ्चाग से देखी जा सकती है।

चन्द्र	राशि	४ अंक
१	मीख	४, ७, १, ०
२	वृष	१, २, ५, ८
३	मिथुन	२, ३, ६, ६
४	कर्क	७, ४, ०, १
५	सिंह	१, २, ५, ८
६	कन्या	२, ३, ६, ६
७	तुला	१, ४, ७, ०
८	वृश्चक	१, २, ८, ५
६	धन	२, ३, ६, ६
१०	मक्र	१, ४, ०, ७
११	कुम्भ	१, २, ५, ८
१२	मीन	२, ३, ६, ६

चन्द्र से अंक निकालने की दूसरी विधि-

कुम्भ का चन्द्रमा जिस तारीख को ६० घड़ी हो, उस दिन जो तारीख हो उस तारीख के आये हुए अंक को ७ दिन तक चढ़ती में गिनना चाहिये।

दिन	अंक	दिन	३ अंक
सोमवार	७	शुक्र	६
मंगलवार	६	शनि	८
बुधवार	५	बीर	३

तारीख से ३ अंक निकाने की विधि-

सोमवार को जो विक्रमी तारीख हो उस तारीख के सामने नीचे दी हुई तारीख में जो अंक लिखे हुए हैं वह चढ़ती के हैं वह उस सप्ताह में अवश्य आने चाहियें। यदि सप्ताह की चढ़ती के ३ अंकों में से १ अंक आये तो फिर चढ़ती बन्द कर देनी चाहिये।

शुदी अथवा बदी की तिथि—

तिथि	३ अंक	तिथि	३ अंक
१	२, ०, ७	९	५, ०, ४
२	२, ५, ८	१०	६, [illegible] ८
३	३, ७, २	११	२, ५, ०
४	६, ४, ५	१२	३, ७, २
५	१, ७, ८	१३	५, ९, [illegible]
६	२, ५, ०	१४	१, ५, ७
७	४, ५, ६	१५	[illegible], ७, ५
८	३, ७, ९		

मास तारीख दिन के ३ अंक

नीचे दिये हुए महीने, तारीख, दिन से ९ दिन तक निम्नि लिखित ३ अंक आवश्य आने चाहियें।

मास	तारीख	दिन	३ अंक
कार्तिक	१, ६, ११	रविवार	९, १, ६
मग्र	५, १०, १५	शनिवार	७, ५, ०
पौह	२, ७, १२	बुधवार	६, २, ३
माघ	४, ९, १४	वीरवार	३, ४, ९
फागुन	५, १०, १५	शुक्रवार	५, ९, ०
चैत	३, ८, १३	वीरवार	७, ३, ८
वैशाख	४, ९, १४	मंगलवार	९, ०, ६
जेष्ठ	३, ८, १३	शनिवार	९, ३, ८
असाढ़	२, ७, १२	सोमवार	३, २, ७
सावन	३, ८, १३	शुक्रवार	५, ३, ८
भादों	५, १०, १५	शनिवार	५, २, ०
असौज	१, ६, ११	इतवार	९, १, ६